मासिक

अध्यात्म संदेश

जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन का मासिक पत्र

वर्ष:3 | अंक:16 | पृष्ठ:30 | मूल्य:निःशुल्क | इंदौर–उज्जैन | शुक्रवार 1 दिसम्बर 2023 | अगहन (मार्गशीर्ष/पौष मास (10), विक्रम संवत् 2080 | इ.संस्करण

प्रेरणा स्रोत
महासिद्ध गुरू गोरक्षनाथ जी

सलाहकार समिति
महंत बालक नाथ योगी जी
गद्दीनशीन महंत, मठ अस्थल बोहर, रोहतक
संसद सदस्य (लोकसभा), अलवर, राजस्थान
कुलाधिपति, श्री बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय (हरियाणा)

महंत पीर योगी रामनाथ जी
भर्तृहरि गुफा, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

महंत डॉ. योगी विलासनाथ जी
अध्यक्ष, श्री गुरू गोरक्षनाथ शिव पंचायतन मन्दिर (ट्रस्ट), गाळणे (महाराष्ट्र)

राष्ट्रसंत बालयोगी उमेशनाथ जी
पीठाधीश्वर–वाल्मीकि धाम, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

प्रधान सम्पादक
योगी शिवनन्दन नाथ

सम्पादक मंडल

वरिष्ठ सम्पादक
डॉ. संतोष खन्ना (दिल्ली)

सम्पादक
डॉ. अलका शर्मा (दिल्ली)

उपसम्पादक
श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा (लखनऊ)
सुश्री इंदु सिंह "इन्दुश्री" (मध्य प्रदेश)

ग्राफिक्स
IDEAwave COMMUNICATIONS

प्रकाशक एवं स्वामी
गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

• गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउंडेशन सर्वाधिकार सुरक्षित। किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित।
• पत्रिका में प्रकाशित सामग्री का समस्त उत्तरदायित्व लेखकों का है। प्रकाशक, प्रधान संपादक एवं संपादक मंडल इसके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायित्व नहीं होंगे।
• समस्त विवादों का निस्तारण, मध्य प्रदेश सीमांतर्गत सक्षम न्यायालयों में किया जाएगा।

editor.adhyatmsandesh@gmail.com

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ क्र.
1	संपादक की कलम से	डॉ. अलका शर्मा	03
2	कालभैरव जयंती	योगी शिवनन्दन नाथ	05
3	भव्य और दिव्य संकेत....	सुजाता प्रसाद	07
4	नारी की जंग जारी है	प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे	08
5	दोहे	भीम सिंह नेगी	08
6	गर्भस्थ शिशु को संस्कार दीजिये	डॉ. सन्तोष खन्ना	09
7	भारत की बात सुनाता हूँ...	डॉ. श्याम सुन्दर पाठक 'अनन्त'	11
8	श्री शिव वन्दना	ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र	12
9	आज के परिप्रेक्ष्य में अपनिषदों का...	डॉ. अर्चना प्रकाश	13
10	ईश्वर दो ऐसा वरदान	मुकेश कुमार ऋषि वर्मा	14
11	गीता का पावन संदेश	डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम	15
12	भारत मां के चरणों में	डॉ. सुमन मिश्रा	16
13	सजते पल्लव	श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा	17
14	जागरण का भाव भर दो	डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक	20
15	अटल जी की कविताओं....	कृष्ण कुमार यादव	22
16	न रत्नमन्विष्यते मृगयते हि तत।	डॉ. अलका शर्मा	25
17	अमानवीयता के दंश से बेजान...	डॉ. अजय शुक्ला	27
18	ज्योतिष क्या है?	पंडित कैलाशनारायण	29
19	भगवान नेमिनाथजी का गर्भ...	डॉ. अरविंद जैन (विद्यावाचस्पति)	30

संपादक की कलम से

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश

अध्यात्म संदेश पत्रिका परिवार के समस्त सुधीजनों को नमोनमः

ओ शं नो वातः पवता शं नस्तपतु सूर्य।
शं नो कनिकदेवः पर्जन्यो अभिवर्षतु।

(हे परमेश्वर पवन, सूर्य, उत्तम गुण युक्त अग्नि,मेघ हमारे लिए कल्याणकारी हो)

अनादि काल से चली आयी पंच महाभूतों-आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी से मिलकर बनी इस सृष्टि का महत्व बताते हुए वेदों में यत्र तत्र आकाश, वायु, जल,पृथिवी अग्नि को मनुष्यों के लिए कल्याणकारी बनाने की प्रार्थनाए की गई है ।

दूरदर्शी वैदिक ऋषियो ने हजारों वर्ष पूर्व ही मानो सृष्टि प्रदूषण के संभावित खतरों को जान लिया था। त्यौहारो की श्रृंखला के बाद वायु प्रदूषण चरम सीमा पर है । जल, वायु प्रदूषण को रोकने की हम सबकी भी कुछ जिम्मेदारी है।

क्यों न हम सब मिलकर कुछ ऐसा कार्य करे ताकि वायु ,जल सर्वत्र उपलब्ध हो शुभ गंध को धारण किये न कि प्रदूषित वायु, अस्वच्छ जल और कचरे से भरी पृथ्वी। इन पांच तत्वों को स्वच्छ रखने बस अपने हिस्से की जिम्मेदारी का निर्वाह करना है।

त्रिगुणात्मक प्रकृति (सत्व, रजस, तमस) से युक्त लोगो के स्वभाव में अंतर होने के कारण अधिकांश लोग समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहण समुचित रूप से करने मे सदा विफल होते है । वेदों में बताए गए जीवन मूल्यों को -

मा प्र ग्राम पथो वयम।
Let's not leave right path
हम सही मार्ग से न भटके।

वास्तविक रूप से अपने जीवन मे अपनाने का दुःसाहस सतो गुण प्रधान चंद विरले लोग ही कर पाते है। बाकी रजस, तमस से भरे लोग केवल स्वार्थसिद्धि, चाटुकारिता में लिप्त पाए जाते है। अनेको समाजसेवी संस्थाओं, सरकारों के निरंतर कार्यरत होने के कारण वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण लगातार भूमि खनन को रोकने की दिशा मे लगातार कार्य किये जा रहे है मुझे पूर्ण विश्वास है -

हर समस्या का हल होगा
वो आज नही तो कल होगा।

नवम्बर मास में हम सभी ने त्यौहारों की समृद्ध श्रृंखला का भरपूर आनंद लिया। अब दिसंबर मास भी महत्वपूर्ण दिवसों की सौगात लेकर आपके समक्ष उपस्थित है ।

1 दिसम्बर विश्व एड्स दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य एचआईवी से संक्रमण के प्रति लोगो को जागरूक करना है ।

4 दिसंबर को नौसेना दिवस मनाया जाता है। नौसेना जिसे जल प्रहरी भी कहा जाता है दुश्मन ने जब भी आक्रमण की सोची नौसेना ने बड़ी ही मुस्तैदी से जलमार्गो की रक्षा की। नौसेना के विशिष्ट, सराहनीय कार्यो, उपलब्धियों, अदम्य साहस को नमन करने के लिए भारतीय नौसेना दिवस मनाया जाता है ।

5 दिसंबर को कालभैरव जयंती महोत्सव सम्पूर्ण भारतवर्ष में उत्साहपूर्वक मनाया जाता है।

7 दिसंबर सशस्त्र झंडा दिवस के रूप में मनाया जाता है। देश की शहीद हुए सैनिकों के सम्मान, बहादुरी त्याग, बलिदान को सम्मान देने के उद्देश्य से ये दिवस मनाया जाता है ।

10 दिसंबर 1948 को संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा मानवाधिकारों की सार्वजनिक घोषणा की गई जो वैश्विक पटेल पर सभी के अधिकारों को सुनिश्चित करने वाली घोषणा थी। इसी कारण इस दिन को मानवाधिकार दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

14 दिसंबर को राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस के रूप में मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य जलवायु परिवर्तन जैसे विषय पर जागरूकता पैदा करना। ऊर्जा दक्षता ब्यूरो द्धठम्ऋ ऊर्जा दक्षता व संरक्षण के विषय मे भारत सरकार की उपलब्धियों को भी इसके माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है । गीता जयंती के पावन पर्व पर हरियाणा सरकार के द्वारा अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि पर अत्यंत विशाल स्तर पर आयोजित किया जाता है । जिसमे देश - विदेश के लोग गीता पाठ के लिए आते है । स्कूली बच्चों के लिए भी गीता -ज्ञान विषयक अनेको प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है। ताकि नवपीढ़ी की भी गीता ज्ञान में रुचि पैदा हो और गीता ज्ञान की कीर्ति देश विदेश तक प्रसारित हो सके।

उच्च कोटि शिक्षाविद, समाज सुधारक, राजनीतिज्ञ स्वतंत्रता संग्राम में मुख्य भूमिका अदा करने वाले पंडित मदन मोहन मालवीय जी एवं भारत के पूर्व प्रधानमंत्री, राजनेता, कवि, पत्रकार, प्रखर वक्ता अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती 25 दिसंबर को मनाई जाती है। समाज की दशा व दिशा बदलने वाले पंडित मदन मोहन मालवीय जी एवं अटल बिहारी वाजपेयी जी को कोटि कोटि नमन!

गुरु के बिना ही समस्त ज्ञान प्राप्त करने वाले ब्रह्मा, विष्णु, महेश स्वरूप भगवान दत्तात्रय की जयंती 26 दिसंबर पूर्णिमा को मनाई जाएगी। इसी लिए इस पूर्णिमा को दत्त पूर्णिमा के नाम से जाना जाता है ।

मुख्यपर्वो, जयंती, सामाजिक जागरूकता लाने वाले विषयो की भरपूर जानकारी देने वाले रोचक लेखों से युक्त दिसम्बर मास का नवीन अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है पत्रिका के लिए पूर्ण मनोयोग से उत्तम लेखन में संलग्न समस्त विद्वान लेखक वृन्द का अतिशय आभार। पत्रिका के विषय मे आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत है ।

शुभकामनाओ सहित-
डॉ. अलका शर्मा

05 दिसंबर पर विशेष

कालभैरव जयंती

योगी शिवनन्दन नाथ
प्रधान संपादक

यह एक महत्वपूर्ण हिंदू त्यौहार है,जिसे 'महाकाल भैरवाष्टमी' या 'कालभैरव अष्टमी' के नाम से भी जाना जाता है। श्री कालभैरव,शिव का पांचवा अवतार हैं, जो सर्वदा भक्तों की कामनाओं को पूर्ण करने वाले हैं। भैरव अवतार की शक्ति का नाम भैरवी गिरजा है, जो भगवान शिव के रौद्र रूप भगवान काल भैरव को समर्पित है।

शिव पुराण शत रुद्र संहिता के आठवे अध्याय के अनुसार भगवान शिव ने मार्गशीर्ष माह की कृष्णपक्ष की अष्टमी को भैरव रूप में अवतार लिया था। पुराणों में भैरव देव से सम्बन्धित अनेक कथाऐं मिलती हैं। 'शक्ति संगम तंत्र' के अनुसार सभी देवताओं के तेज से मिलकर भैरव देवता की उत्पत्ति हुई है। भैरव ने पांच वर्ष के बटुक का रूप धारण कर 'आपद' नाम के भयानक बलशाली राक्षस का वध किया था, इसी कारण इनका एक नाम आपदुद्धारक भी प्रसिद्ध है। पंचमुखी ब्रह्मा अपने चार मुख से चार वेदों की रचना कर चुके थे, पाँचवे मुख से वे एक ऐसे शास्त्र की रचना करने जा रहे थे जो सृष्टी के हित में नहीं था। शिव के मना करने पर भी ब्रह्मा नहीं माने तब ब्रह्मा के अभिमान को दूर करने के लिए शिव अपने रुद्र रूप में क्रोधित हो गये और अपनी क्रोधाग्नि से 'महाभीषण भैरव' को प्रकट किया। जिसने शिव के आदेश से ब्रह्मा के पास जाकर उस शास्त्र की रचना न करने का विनम्र अनुरोध किया परन्तु ब्रह्मा ने अनुरोध अस्वीकार कर उनका घोर अपमान किया। इससे क्रोधित होकर भैरव ने केवल अपने नख के अग्रभाग से ही ब्रह्माजी का पाँचवा शीश काट दिया। ब्रह्माजी के अहंकार को नष्ट करने वाले भैरव ही काल भैरव नाम से जग प्रसिद्ध हैं।

स्कन्दपुराण के अवन्ती खण्ड में उज्जैन स्थित काल भैरव का वर्णन किया गया है। काल भैरव अष्टमी पर अत्यन्त भव्यता के साथ नगर में श्री काल भैरव की शोभायात्रा निकाली जाती है। जिसमें लाखों के संख्या में भक्तगण दर्शन करते हैं और उनसे आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। यहाँ पर भैरव की आराधना की विशेष महिमा है और भैरव की भक्ति, पूजा आराधना का प्रमुख स्थान काल भैरव का मन्दिर ही है। काल भैरव उज्जैन के प्रधान देव माने जाते है। यह सिद्ध जाग्रत स्थान तांत्रिक साधना हेतु पवित्र सिद्ध पीठ है। यहाँ भैरवजी मूर्ति रूप में मदिरा का रसपान करते हैं, मूर्ति के मुख में मंत्रोच्चारण के साथ मदिरा पात्र लगाने पर वह पात्र देखते ही देखते खाली हो जाता है। भक्तों की काल भैरव के प्रति अगाध श्रद्धा है। यहाँ सब भक्तों की मनोकामना पूर्ण होती है। इस मन्दिर के प्रांगण में संकरी तथा गहरी गुफा में पाताल भैरवी का मन्दिर स्थित है।

काल भैरव जयंती का महत्व : भगवान भैरव के तांत्रिक उपासकों के लिए काल भैरव जयंती का खास महत्व होता है। साधक रात्रि में दुर्लभ जड़ी बूटियों एवं विशेष सामग्रियों के साथ विधि विधान से महायज्ञ संपन्न कर अपने इष्ट देव काल भैरव को प्रसन्न करते हैं। इस दिन भगवान शिव का रौद्र रूप कहे जाने वाले काल भैरव भगवान की विधि विधान से पूजा करने की परंपरा है। कालान्तर में भैरव–उपासना की दो शाखाएं– बटुक भैरव तथा काल भैरव के रूप में प्रसिद्ध हुई। जहां बटुक भैरव अपने भक्तों को अभय देने वाले सौम्य स्वरूप में विख्यात हैं वहीं काल भैरव आपराधिक प्रवृत्तियों पर नियंत्रण करने वाले प्रचण्ड दंडनायक के रूप में प्रसिद्ध हुए। तंत्रशास्त्र में अष्ट–भैरव का उल्लेख है :
असितांग–भैरव, रुद्र–भैरव, चंद्र–भैरव, क्रोध–भैरव, उन्मत्त–भैरव, कपाली–भैरव, भीषण–भैरव तथा संहार–भैरव। कालिका पुराण में भैरव को नंदी, भृंगी, महाकाल, वेताल की तरह भैरव को शिवजी का एक गण बताया गया है जिसका वाहन कुत्ता है। ब्रह्मवैवर्तपुराण में भी, महाभैरव, संहार भैरव, असितांग भैरव, रुद्र भैरव, कालभैरव, क्रोध भैरव ताम्रचूड़ भैरव तथा चंद्रचूड़ भैरव नामक आठ पूज्य भैरवों का निर्देश है।

ऐसी मान्यता है कि काल भैरव की पूजा–अर्चना करने से सभी नकारात्मक शक्तियों का प्रभाव समाप्त हो जाता है। शारीरिक, मानसिक रोगों और दुःखों से छुटकारा मिलता है। भगवान कालभैरव के नाम से ही स्पष्ट है कि वे भक्तों की काल और भय से रक्षा करते हैं. हिंदू धर्म में काल भैरव की पूजा का विशेष महत्व होता है। इस दिन भगवान कालभैरव के मंदिरों में विशेष अनुष्ठान आयोजित किए जाते हैं। पूर्ण निष्ठा के साथ 56 भोग द्वारा उनकी विशेष पूजा–अर्चना पारंपरिक वाद्य यंत्रों की विशेष ध्वनि के साथ की जाती है। भगवान काल भैरव के उपासक इस जयंती महापर्व को बड़ी धूमधाम और उत्साह से मनाते हैं।

पौराणिक मान्यतानुसार काल भैरव अष्टकम का जप नियमित रूप से भगवान काल भैरव को प्रसन्न करने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने का सबसे शक्तिशाली तरीका है। सर्वोत्तम परिणाम प्राप्त करने के लिए आपको सुबह स्नान करने के बाद पूर्ण श्रद्धा के अनुसार भगवान भैरव की मूर्ति या चित्र के सामने काल भैरव अष्टकम का पाठ करना चाहिए।

काल भैरव अष्टकम्

देवराजसेव्यमानपावनांघ्रिपङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगंबरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।

भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्।
कालकालमंबुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।

शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्।
भीमविक्रमं प्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।

धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम्।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरंजनम्।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।

अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसंततिं
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम्।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकाधरं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।

भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम्।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।

भव्य और दिव्य संकेत चिह्न स्वास्तिक

सुजाता प्रसाद
लेखिका,
शिक्षिका सनराइज एकेडमी
मोटिवेशनल ओरेटर
नई दिल्ली

'स्वस्तिक क्षेम कायति, इति स्वास्तिकष् अर्थात कुशलक्षेम या कल्याण का प्रतीक ही स्वास्तिक है। स्वास्तिक का अर्थ होता है कल्याणकारी या मंगलकारी। स्वास्तिक चिह्न शांति, सद्भाव और निरंतरता का प्रतीक है। सनातन परंपरा में किसी भी कार्य का शुभारंभ रोली चंदन से स्वास्तिक बनाकर किया जाता है। एक विशेष आकृति जिसे किसी भी कार्य को शुरू करने से पहले बनाने की परंपरा रही है। हर पूजा, पाठ, अनुष्ठान, वास्तु में इस प्रतीक चिह्न का उपयोग किया जाता है। स्वास्तिक बनाने से सभी मांगलिक कार्य पूर्ण होते हैं। इसे भारतीय संस्कृति में मंगल और शुभ का प्रतीक माना जाता है। मुख्य द्वार पर, तिजोरी के द्वार पर स्वास्तिक बनाने से लाभ होता है। ऐसा माना जाता है यह चिन्ह चारों दिशाओं से शुभता लाता है। मान्यता है कि स्वास्तिक की चारों रेखाएं चारों दिशाओं पूर्व, पश्चिम, उत्तर और दक्षिण की ओर संकेत करती हैं।

एक और मत के अनुसार ये चारों रेखाएं चार वेदों की प्रतीक चिह्न हैं। गणेश पुराण के अनुसार स्वास्तिक चिह्न भगवान गणेश का स्वरूप है, जिसमें सभी विघ्न बाधाएं और अमंगल को दूर करने की दिव्य शक्ति होती है। स्वास्तिक को विश्व ब्रह्माण्ड का प्रतीक चिह्न भी माना जाता है, जिसके मध्य भाग को भगवान विष्णु की नाभि और रेखाओं को ब्रह्मा जी के चार मुख के रूप में निरूपित किया गया है। वहीं अन्यान्य ग्रंथों में इसे चार युग, चार वर्ण, चार आश्रम का सांकेतिक चिह्न भी कहा गया है।

सनातन धर्म की मान्यताओं के अनुसार यदि स्वास्तिक के आसपास एक गोलाकार रेखा खींच दी जाए तो यह सूर्य भगवान का चिह्न माना जाता है, सूर्य देव जो समस्त संसार को अपनी ऊर्जा से प्रकाशित करते हैं। स्वस्तिक को ऋग्वेद की ऋचा में सूर्य का प्रतीक माना

गया है और उसकी चार भुजाओं को चार दिशाओं की उपमा दी गई है। स्वास्तिक का वैज्ञानिक महत्व भी है। सही तरीके से बने हुए स्वस्तिक से सकारात्मक उर्जा प्रवाहित होती है, जिससे हमारी सुरक्षा होती है। हिंदू धर्म के लोगों की आस्था के इस प्रतीक को ध न–वैभव और सुख–समृद्धि प्रदान करने वाला भी माना जाता है।

स्वास्तिक चिह्न बनाने के लिए सबसे पहले चार रेखाएं चार पुरुषार्थो के रूप में घड़ी की दिशा में खींची जाती हैं जो क्रमशः धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का प्रतीक होती हैं। स्वास्तिक की चार रेखाएं घड़ी की दिशा में (क्लॉक वाइज) चलती हैं जो संसार के सही दिशा में चलने का प्रतीकात्मक चिह्न है। ये सभी रेखाएं बाहर से भीतर की और खींची जाती हैं। इसके बाद चार रेखाएं जो मुक्ति को दर्शाती हैं, घड़ी की ही दिशा में खींची जाती हैं जिन्हें सालोक्य, सामीप्य, सारूप्य, सायुज्य कहा जाता है। ये रेखाएं भी पुनः बाहर से भीतर की ओर खींची जाती हैं। इसके बाद घड़ी की दिशा में ही बाहर से भीतर की ओर रेखाओं के द्वारा चार प्रकार के अंतःकरण बनाए जाते हैं, जो हमारे मन, बुद्धि, अहंकार और चेतना के प्रतीक होते हैं। इसके बाद भक्ति के चार प्रकारों को दर्शाने वाले चार आंतरिक बिंदु क्लॉक वाइज दिशा में बनाए जाते हैं जो श्रद्धा, विश्वास, प्रेम और समर्पण का प्रतीक होते हैं। यह विशेष चिह्न बनाते समय यह ध्यान रखना होता है कि रेखाएं मध्य स्थान अर्थात ब्रह्म स्थान को नहीं काटती हों। यानी कभी भी बीच में प्लस बनाकर स्वास्तिक नहीं बनाना चाहिए। ऐसा करने से नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव हो जाता है। अगर चारों रेखाएं बारी बारी से ब्रह्म स्थान की तरफ आती हैं तो स्वास्तिक का पूरा लाभ मिलता है। इस प्रकार जब सभी रेखाएं बाहर से भीतर की ओर यानी ब्रह्म स्थान की ओर आ रही हों तो स्वास्तिक से प्रवाहित ऊर्जा सकारात्मक प्रभाव डालती है। इसलिए हम कह सकते हैं कि स्वास्तिक चिह्न न केवल शुभता का प्रतीक है बल्कि इसे बनाने से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और परिवार में सुख समृद्धि बनी रहती है।

अत्यंत प्राचीन काल से ही भारतीय संस्कृति में स्वास्तिक को मंगल प्रतीक माना जाता है। अति साधारण सा दिखने वाला प्रतीक चिन्ह स्वास्तिक बहुत ही भव्य और दिव्य है। इसमें शामिल सभी रेखाएं अपने आप में चार चार अर्थपूर्ण प्रतीकों को सम्मिलित किए हुई रखती हैं। जैसे – चार प्रकार के पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम, और मोक्ष हैं। चार प्रकार की मुक्ति सायुज्य, सामीप्य, सालोक्य और सारूप्य हैं। चार प्रकार के अंतरूकरण मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार हैं। चार प्रकार की भक्ति श्रद्धा, विश्वास, प्रेम और समर्पण हैं।

इस प्रकार चार युग, चार वर्ण, चार आश्रम एवं धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे चार प्रतिफल पाने वाली सामाजिक व्यवस्था एवं वैयक्तिक विश्वास को जीवंत रखने वाले सभी संकेत दिव्य चिन्ह स्वास्तिक में समाहित रहते हैं। इसलिए हम कह सकते हैं कि स्वास्तिक शब्द में सम्पूर्ण विश्व के कल्याण और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना निहित होती है।

नारी की जंग जारी है

प्रो. डॉ. शरद नारायण खरे
प्राचार्य
शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय
मंडला (म.प्र.)

नारी नित मुश्किल से लड़ती, संघर्षी है नारी जीवन।
देकर घर भर को उजियारा,पर दुख पाता नारी जीवन ।।

कर्म निभाती है वो तत्पर,हर मुश्किल से लड़ जाती।
गहन निराशा का मौसम हो,तो भी आगे बढ़ जाती।।
पत्नी,माँ के रूप में सेवा,तो क्यों खलता नारी जीवन।
देकर घर भर को उजियारा,पर दुख पाता नारी जीवन ।।

संस्कार सब उससे चलते,धर्म नित्य ही उससे खिलते।
तीज–पर्व नारी से पोषित,नीति–मूल्य सब उसमें मिलते।।
आशा और निराशा लेकर,नित ही पलता नारी जीवन।
देकर घर भर को उजियारा,पर दुख पाता नारी जीवन ।।

वैसे तो हैं दो घर उसके,पर सब कुछ बेमानी।
फर्ज और कर्मो से पूरित,नारी सदा सुहानी।।
त्याग और नित धैर्य,नम्रता,संघर्षो में नारी जीवन।
देकर घर भर को उजियारा,पर दुख पाता नारी जीवन ।।

दोहे

भीम सिंह नेगी,
जिला बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश

भूल गये वे लोग सब, उम्र रहे जिन संग।
दुनिया के इस रंग को, देख हुआ मैं दंग।।

जहाँ हुए असहाय हम, सबने खींचे हाथ।
यही चलन संसार का, मेरे भोलेनाथ।।

कैसी लीला आपकी, चलती का संसार।
जब हो गठरी हाथ में, इर्द–गिर्द परिवार।।

जीवनभर जिनके लिए, रहे हम परेशान।
उनको अब लगने लगे, बोझ हम भगवान।।

गर्भस्थ शिशु को संस्कार दीजिये

डॉ. सन्तोष खन्ना
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
वरिष्ठ सम्पादक (अध्यात्म संदेश)
वरिष्ठ साहित्यकार एवं प्रधान संपादक :
महिला विधि भारती त्रैमासिक पत्रिका
दिल्ली–110088

आजकल प्रायः देखा जा रहा है कि बच्चों के पालन पोषण में उनके शरीर के विकास पर बहुत ध्यान दिया जाता है, उनके मानसिक और व्यक्तित्व विकास में उन्हें अच्छे संस्कार देने का भी बहुत महत्व है परंतु इस ओर इतना अधिक ध्यान नहीं दिया जा रहा है। देश की शिक्षा प्रकृति और स्कूलों के वातावरण में बच्चे अच्छे इंसान कम 'बुल्ली' अधिक बन रहे हैं और इधर बच्चों में अपराध की प्रवृत्ति बहुत बढ़ती जा रही है। इसके अनेक कारण हो सकते हैं परंतु सबसे महत्वपूर्ण कारण है आज के बच्चों में संस्कारों की कमी। बाज़ारवाद और उपभोक्तावाद का बोलाबाला इतना है कि आज समाज में नैतिक और मानव मूल्यों का ह्रास हो रहा है बच्चों को संस्कार की तो बहुत कम बात होती है।

जब शिशु गर्भस्थ होता है उसके जन्म लेने से पहले ही उसका मस्तिष्क मां के मस्तिष्क से जुड़ जाता है। चिकित्सा विज्ञान यह स्वीकार कर चुका है कि गर्भस्थ शिशु किसी चेतन्य जीव की तरह व्यवहार करता है । वास्तव में बच्चों को स्वस्थ संस्कार देने की प्रक्रिया गर्भस्थ अवस्था से ही आरंभ हो जानी चाहिए। गर्भस्थ शिशु माता के माध्यम से सुन–समझ सकता है और ग्रहण भी कर सकता है और उसके अनुसार अपनी प्रतिक्रिया भी व्यक्त कर सकता है। जिन गर्भवती माताओं ने अपने गर्भस्थ शिशु की हरकतों पर बारीक़ी से ध्यान दिया हो तो उन्हें इस बात का स्पष्ट भान होता है कि गर्भस्थ शिशु पर मां की मानसिक स्थिति का, उसके तनाव का, उसकी खुशी आदि का बहुत प्रभाव पड़ता है। आज तो चिकित्सा विज्ञान का यह उदाहरण भी सामने आया है कि यदि गर्भवती महिला की सोनोग्राफी के दौरान उसे सूई चुभोई जाती है तो गर्भस्थ शिशु भी तड़प उठता है।

गर्भवती महिलाओं को बड़े बूढ़े यह ज्ञान देते हैं कि गर्भ अवस्था में क्रोध मत करो, तनाव मत करो, प्रसन्न रहो क्योंकि तुम्हारे अंदर ईश्वर की सबसे अद्भुत बहुमूल्य देन शिशु पल रहा है। इस संदर्भ में महाभारत में आए इस प्रसंग से लगभग सभी लोग तो

परिचित होंगे ही कि अर्जुन ने अपनी पत्नी सुभद्रा को चक्रव्यूह की जानकारी दी थी और गर्भस्थ शिशु के रूप में गर्भस्थ शिशु अभिमन्यु ने उसे सीख लिया था । यह दूसरी बात है कि यह सीख उसकी अधूरी रह गई थी । अभिमन्यु केवल चक्रव्यूह के भेदने की विधि जान पाया था उससे बाहर आने की नहीं क्योंकि कहते हैं कि इस बीच सुभद्रा को नींद आ गई थी। इस तरह की और भी पौराणिक कथाएं प्रचलित हैं। जैन धर्म में गर्भस्थ शिशु महावीर के बारे में भी भद्रबाहु स्वामी जी ने कल्पसूत्र नामक ग्रंथ में वर्णन किया है। और तो और, बाइबिल में भी इसी तरह का एक प्रसंग आता है। बाइबिल में मरियम और अलिशिबा के बीच में संवाद हुआ था जिसमें गर्भवती मरियम को गर्भवती अलिशिबा बताती है कि उसके गर्भ में दिव्य शिशु के अस्तित्व को महसूस कर मेरे गर्भ का शिशु आनंद से उछल रहा है। इस उदाहरण से गर्भस्थ शिशु की सजीवता और संवेदनशीलता स्पष्ट होती है और इस बात का महत्व समझा जा सकता है कि गर्भस्थ शिशु के प्रति मां–बाप और समाज की कितनी बड़ी जिम्मेदारी है ।

सनातन धर्म में संतति जनन की बातों पर बहुत महत्व दिया जाता है। संतति जनन के लिए सबसे पहले तो माता–पिता को ही संस्कारवान होना होगा। संतति प्रजनन व्यक्तिगत मनोरंजन नहीं वरना सामाजिक उत्तरदायित्व है। वर्तमान में इस बात पर कोई अधिक ध्यान नहीं देता है। हमारे यहां तो कहा गया है–

जननी जने तो भक्त जन, कां दाता या शूर' अर्थात्

'हे जननी, यदि तुम्हें संतान को जन्म देना है तो आस्थावान, कल्याणकारी या शौर्यशाली संतान को ही जन्म दे।'

बच्चे देश का भविष्य और माता–पिता की संपदा और मान सम्मान होते हैं। वैसे तो सनातन धर्म में गर्भस्थ शिशु के विकास के साथ कई प्रकार के संस्कारों का वर्णन है आज के जीवन की आपाधापी में इन संस्कारों के लिए न तो किसी में धैर्य बचा है और ना ही समय होता है परंतु संस्कारों से तेजस्वी, मेधावी और कर्मशील संतानों का निर्माण किया जा सकता है। कहा जाता है गर्भस्थ शिशु के दिमाग का विकास 3 से 7 माह के भीतर तेजी से होता है, शोध से भी पता चलता है कि गर्भावस्था के दौरान मां कोई सकारात्मक क्रिया करती है इससे खुशी देने वाले हार्मोन शरीर में बढ़ जाते हैं। मंत्र उच्चारण से, संगीत सुनने, ध्यान करने जैसी क्रियाओं से बच्चे के दिमाग का सक्रिय विकास होता है। वैसे तो बच्चों का हर आयु में संस्कारों के साथ पालन पोषण होना चाहिए परंतु वास्तव में यह प्रक्रिया तो संतान जन्म की प्लानिंग से ही शुरू हो जानी चाहिए। किंतु क्या आज की शिक्षित महिलाएं भी इस बात से परिचित होती है कि उन्हें इस महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व के चरण में प्रवेश से पहले ही अपनी सोच और संवेदनशीलता को साकार बनाना चाहिए और उस समय विशेष में स्वयं को स्वस्थ, प्रसन्न और संतुष्ट रखना चाहिए और गर्भावस्था में भी इसी मन:स्थिति को बना कर रखते हुए पोष्टिक आहार खाना चाहिए और अपना आचरण भी शुद्ध रखना चाहिए। अतः स्वस्थ, संवेदनशील और संस्कारवान संतान के लिए गर्भ संस्कार गर्भाधान से पहले से आरम्भ हो जाते हैं। गर्भस्थ शिशु जैसे जैसे विकसित हो अपनी उपस्थिति दर्ज कराने लगता है मां को उसके प्रति क्रमशः सजग होते जाना चाहिए। गर्भ संस्कार सही अर्थों में गर्भस्थ शिशु के साथ माता का स्वस्थ संवाद है अर्थात् उन दिनों मां की वैचारिकता शिशु को ऐसे प्रभावित करेगी कि वह उसके समूचे जीवन की प्रवृत्ति बन जायेगी। अतः मां को उन दिनों न केवल अपने खान पान पर ध्यान देना होता है बल्कि अपने उठने बैठने, चलने फिरने, समय पर सोने और जागने आदि के बारे में सर्तकता बरतने की जरूरत है। साथ ही कलह क्लेष से, राग द्वेष से और मिथ्या कथन और मिथ्या आचरण से बचना चाहिए। आप कहेंगे कि क्या वह साधु हो जाये? नहीं, पर सच यही है कि संतित जनन त्याग और तपस्या की मांग करता है और अंत में प्रसव वेदना के कठिन बीहड़ के बाद जब इस तपस्या का फलागम ममता की झोली में आता है तो अनन्य और अनकहे आनन्द की अनुभूति अनिवर्चनीय होती है, जैसे प्रसव वेदना का घनीभूत अहसास वर्णनातीत है उसे केवल प्रसव से गुजरती मां ही जानती है वैसे शिशु के जन्म का अनिवर्चनीय आनन्द है।

विश्व प्रसिद्ध भारतीय कवियित्री डॉ. कीर्ति काले ने गर्भस्थ शिशु के प्रति जिम्मेदारी को रेखांकित करते हुए लिखा–

'जो आधुनिकाएँ बच्चे के जन्म को केवल शारीरिक क्रिया मानकर गर्भ संस्कारों जैसी पुरातन मान्यताओं का मजाक उड़ाती हैं उनसे कहना चाहती हूँ कि बेशक आपने बच्चे को जन्म तो दिया लेकिन क्षमा कीजिए आप भौतिक आधुनिकता के चक्कर में ईश्वर द्वारा स्त्री को विशेष रूप से प्रदान किए गए सृजन करने के इस अद्भुत आनन्द की अनुभूति से वंचित रह गई।'

इस संदर्भ में शिक्षित परंतु कामकाज होने के कारण अति व्यस्त महिलाओं से दो शब्द परामर्श में यह कहना अनुचित न होगा कि जीवन के सभी कार्यों में अगर कुछ महत्वपूर्ण है तो वह है संतित जनन, जो केवल महिलाओं को वरदान स्वरूप मिला है, उसे सही समय और सही भावना के साथ निभायें, यहीं समाज सेवा है,देश भक्ति है राष्ट्र भक्ति है और ईश्वर की भक्ति भी यही है । अवतारों को भी नारी ही जनती है।

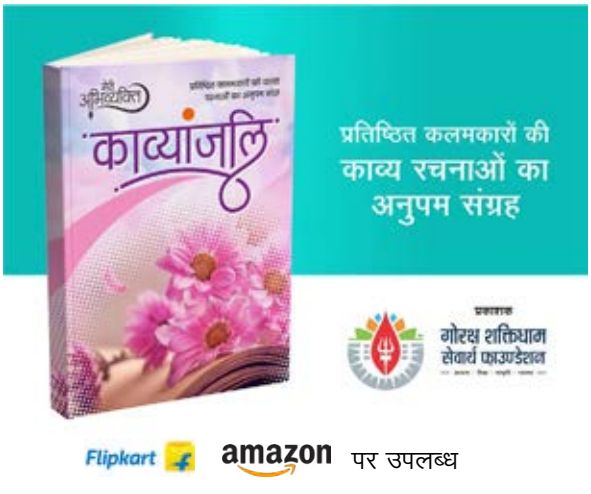

भारत की बात सुनाता हूं...

(भाग–2)

डॉ. श्याम सुन्दर पाठक 'अनन्त'

लेखक, कवि, मोटीवेशनल स्पीकर,
असिस्टेंट कमिश्नर (वस्तु एवं सेवा कर)
उत्तर प्रदेश

भारत की गाथा को ठीक से समझना हो तो इसकी आत्मा 'अध्यात्म' को समझना पड़ेगा। अध्यात्म ही भारतीय संस्कृति का जीवन और प्राण रहा है। भारत ही वह भूमि है जिसका आकाश सदैव महान आध्यात्मिक विभूतियों– अवतारों, श्रेष्ठ ऋषि–मुनियों, तपस्वियों–योगियों, सिद्ध महापुरुषों एवं एक से बढ़कर एक महान संतों रूपी सितारों से जगमगाता रहा है। श्रीराम की मर्यादा धड़कन बनकर इसके हृदय में बसी, तो यह धरा श्री कृष्ण के दिव्य कर्मपथ की भी साक्षी रही। सद्गुरुओं ने इसे बार– बार ब्रह्मज्ञान का, तत्वज्ञान का अमृत पिलाया। यही कारण है कि यह भूमि पुष्पित– पल्लवित हो पाई और इतनी विलक्षण और दिव्य आत्मगाथा लिख पाई ।

परन्तु खेद है कि आज यह गाथा सिर्फ किताबों में, बड़े– बड़े सुन्दर लेखों में ही सिमट के रह गई है। आज वह ठोस आधार खोखला हो गया है जिसके ऊपर इस महानतम संस्कृति का वैभवपूर्ण महल खड़ा था। चिन्तनीय बिन्दु ये है कि वह संस्कृति जिसका परचम सम्पूर्ण विश्व में लहराता था– वो आज एक खण्डहर मात्र क्यूँ रह गया है ? इसके उत्तर में कुछ लोगों का तर्क है कि : धर्म की अतिशयता ने ही भारत का विनाश किया है। ऐसे लोगों का कुतर्क है कि हमने कर्त्तव्य से च्युत होकर वैराग्यपूर्ण अध्यात्म को ही महत्व दिया, इसलिए विकास के सभी क्षेत्रों में हम धीरे– धीरे पिछड़ते चले गए और यही हमारी परतन्त्रता का कारण बना। लेकिन ये तर्क केवल उन्हीं लोगों के गले उतर सकता है जिन्हें अध्यात्म का सही मतलब नहीं पता। जो अध्यात्म के वास्तविक अर्थों से भलीभाँति परिचित हैं, वो जानते हैं कि भारत की विकृत स्थिति का कारण अध्यात्म से दूर हो जाना और उसमें विकृति आ जाना रहा है। यदि

भारत ने अपने अध्यात्म को पकड़ा रहा होता तो हम कभी गुलाम ही नहीं बनते। हमारा व्यक्तिगत जीवन हद से ज्यादा अधार्मिक, स्वार्थपूर्ण, व भौतिकता से ग्रस्त हो गया, इसलिए हम पतन की खाईयों में गिर पड़े ।

एक बार स्वामी विवेकानन्द जी से किसी ने भारत की तत्कालीन दशा देखकर पूछा कि वेदों की भूमि भारत आज इतनी दयनीय स्थिति में क्यों है ? स्वामी जी ने समस्या का मूल बताते हुए कहा– यदि मनुष्य के पास बन्दूक है, परन्तु वह उसे चलाना ना जानता हो तो अवश्य ही शत्रु से पराजित हो जाएगा। भारत के पास अथाह आध्यात्मिक कोष है, जो सभी प्रकार की निर्धनता को दूर करने में सक्षम है, परन्तु भारतवासी इस कोष का लाभ उछाना नहीं जानते, इसी कारण पिछड़ गए हैं ।

आध्यात्मिकता को खोने के बाद एक और वज्राघात हुआ– पश्चिमी सभ्यता का। यदि हम पश्चिमी सभ्यता के अच्छे विचारों व उन्नत पक्षों का अनुकरण करते, तब तो बात ठीक थी, क्योंकि यह तो स्वयं हमारे ही ऋषिगणों का उद्घोष है– "आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः" (ऋग्वेद 1–89–1) अर्थात् हर ओर से आने वाले शुभ विचारों का स्वागत करो। परन्तु हम एक बहुत बड़ी भूल कर बैठे– हम पाश्चात्य सभ्यता का अनुकरण नहीं, अन्धानुकरण कर बैठे ।

अपनी रीतियों, परम्पराओं, तिथियों, दिवसों को दरकिनार कर उनके प्रचलित दिवसों पर उत्सव मनाने लगे। इसी अंधानुकरण के कारण हम अपनी ही परम्पराओं व संस्कारों का तिरस्कार करने लगे और उन्हें अवैज्ञानिक और रुढ़िवादी कहकर अपने जीवन से ही निकाल दिया। अपने ही देश के अवतारी युगपुरुषों के दिव्य कर्मों व लीलाओं पर ही प्रश्नचिन्ह खड़े करने लगे। उनकी आदर्श से भरी शिक्षाओँ व मर्यादाओं को सिरे से नकार दिया और इसी कारण हम सैकड़ों सालों तक गुलाम बने रहे और ये गुलामी हमारे रक्त में इस कदर रच–बस गई है कि आज हमें पाश्चात्य सभ्यता का अन्धानुकरण ही विकसित और सभ्य होने की निशानी लगता है।

भारत की इसी सोई शक्ति को जगाने का प्रयास है ये लेख श्रृंखला– जो भारत की आत्मा – अध्यात्म के उन गहरे राजों पर से परदा उठाएगी, जिन तक शायद हमारी दृष्टि नहीं गई, या हमने देखने की कोशिश नहीं की। ये भारतीय संस्कृति की उन महान परम्पराओं से आपको रु–ब–रू कराने का प्रयास है , जिसे जानकर आप गर्व से भर उठेंगे। इकबाल ने लिखा था–

"यूनान, मिस्र, रोमां, सब मिट गए जहाँ से,
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी,
सदियों रहा है दुश्मन दौरे जहाँ हमारा,
सारे जहाँ से हिन्दोस्तां हमारा ।।"

प्राचीन सभ्यताओं को गौर से देखिए– मिस्र, बेबीलोन, यूनान तथा रोम–पूर्वकाल में ये संस्कृतियाँ कभी विश्व पटल पर खूब फली– फूलीं, पुष्पित– पल्लवित हुईं । किन्तु आज वे कहाँ हैं ? है कहीं उनका अस्तित्व ? एस समय ऐसा था, जब यूनानी फौज के आक्रमण से चारों दिशाएँ थर्रा उठीं थीं । उनके गौरवशाली एथेन्स में विद्वान दार्शनिकों की सभाएँ लगती थीं, पर आज उनके कालग्रस्त खण्डहरों में घोर सन्नाटा छाया है ।

"सुल्तान यहाँ माशूक जो थे, सूने हैं पड़े मरघट उनके,
जहाँ चाहने वाले लाखों थे, वहाँ रोने वाला कोई नहीं ।।"

वो कालखण्ड ऐसा था कि हर भौतिक वस्तु पर रोम का राष्ट्रीय चिन्ह – गिद्ध अंकित रहता था, प्रसिद्ध ऐप्पियन मार्ग पर सांस्कृतिक गहमागहमी रहती थी। कैपीटोलाइन पहाड़ पर हजारों दर्शनार्थियों के मेले जुटते थे, लेकिन आज वहाँ सिर्फ रेत का ढ़ेर रह गया है। युफ्रेटीज नदी के किनारे बेबीलोन सभ्यता का विस्तार था, परन्तु आज वहाँ मात्र खण्डित स्तूप और चौत्य खड़े हैं। विचारणीय है कि भारतीय संस्कृति इन सबकी अपेक्षा सबसे अधिक प्राचीन है। फिर भी उसका महिमामण्डित रूप आज भी जीवंत है। ऐसा क्यों ? इस पर चिंतन जारी रहेगा ....अगले अंक में....

श्री शिव वन्दना

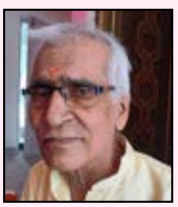

ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र
स्वतंत्र लेखन
बिहार

नमामी नमामी नमन शंकरम्।
वाम भागे विराजे शैल नन्दिनी,
अंक धारे गणाधीश जग बन्दनम्।
नमामी नमामी नमन शंकरम्।
गौर वर्णम् जटाजूट जगदीश्वरम्,
शिव विशालाक्ष कंठे भुजग शोभितम्।
नमामी नमामी नमन शंकरम्।
चन्द्र शोभत ललाटे प्रसन्नानम्,
नीलकंठम् दयालम् शुचिम् सुन्दरम्।
नमामी नमामी नमन शंकरम्।
मरू भस्म अंगे गले मुंडमालम्,
जटा गंग मृगचर्म दिगअम्बरम्।
नमामी नमामी नमन शंकरम्।
त्रीशूल पाणीं डिमक डिम्म डमरू,
बजाते चलें हो बसह पर सवारम्।
नमामी नमामी नमन शंकरम्।
निरंजन निरंकार ओंकार भूषण,
शरणागत् श्ब्रह्मेश्वरश तव विश्वेश्वरम्।
नमामी नमामी नमन शंकरम्।

आज के परिप्रेक्ष्य में उपनिषदों का महत्व

डॉ. अर्चना प्रकाश
स्वतंत्र लेखन
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

उपनिषद हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं। इस ग्रंथ में ब्रह्म यानी ईश्वरीय सत्ता के स्वभाव और आत्मा के बीच अंतर संबंध की दार्शनिक व्याख्या की गई है। उपनिषद् ही भारतीय दर्शन का आधार है। वेदांत साख्य जैन या फिर बौद्ध दर्शन आदि सभी में परम ज्ञान परम विद्या और इस लोक की परिधि से बाहर की बातें की गई हैं ।

उपनिषद् देववाणी संस्कृत में लिखे गए हैं। इनकी भाषा शैली भी गद्य व पद्य दोनों में है। उपनिषदों में गुरु शिष्य के बीच संवाद को प्रकट किया गया है। प्रसिद्ध इतिहासकार मैक्स मूलर ने इन उपनिषदों का अनुवाद किया था। मुगल काल में दारा शिकोह ने फारसी भाषा में उपनिषदों का अनुवाद किया था। मूल रूप से उपनिषदों की संख्या 108 है जिनमें 10 को प्रमुख माना जाता है। लेखक महेश शर्मा के अनुसार 'उपनिषद वेद का ज्ञान कांड है। यह चिर प्रदिप्त वह ज्ञान दीपक है, जो सृष्टि के आदि से प्रकाशमान है और शाश्वत व सनातन है।'

शास्त्रों में ऐसा कहा गया है की चौरासी लाख योनियों की नैया पार करने के बाद मनुष्य जीवन प्राप्त होता है। ऐसे में यदि मनुष्य को मोक्ष प्राप्त करना है तो वह ज्ञान उपनिषदों में ही मिलेगा। वास्तव में उपनिषद का अर्थ है नीचे बैठकर सुनना, हजारों साल पहले ऋषि मुनि अपने छात्रों को उपदेश देते थे। जिसमें आत्मा परमात्मा सृष्टि जीव आराधना मोक्ष आदि महान विषयों पर व्याख्या है ।

इसलिए उपनिषद पढ़ने से हमें ईश्वर का महत्व, जीवन का महत्व, जीवन का लक्ष्य आदि विषय ज्ञात होते हैं। जो जीवन जीने के लिए बेहद सहायक होते हैं। उपनिषदों के सूत्र वाक्य हमें अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश में ले जाते हैं जैसे :

'असतो मां सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।।'

उपनिषदों में छिपे हैं वह जीवन मूल्य जो स्वावलं. बन व स्वाभिमान की भावनाएं जागृत करते हैं। कठोपनिषद के अमर वाक्य 'तिष्ठ जागृत प्राप्य वरन्निबोधत।' को अपने जीवन में आत्मसात कर स्वामी विवेकानंद ने संपूर्ण भारतवर्ष की सोई हुई युवा शक्ति में आध्यात्मिक स्वालंबन एवं स्वाभिमान की भावनाओं को जागृत किया था।

स्वामी विवेकानंद कहा कि – 'उपनिषदों में ऐसी शक्ति का भंडार है जो संपूर्ण विश्व को बल, शौर्य व नवजीवन प्रदान कर सकता है। 'संत विनोबा भावे लिखते हैं– 'उपनिषदों की महिमा अनेकों ने गाई है, उपनिषद कोई साधारण पुस्तक नहीं है वह समग्र जीवन दर्शन है।' मानव जीवन के लिए जो कुछ भी इष्ट, कल्याणकारी, शुभ व आदर्श है। उसे उपनिषद प्रमुखता से प्रदान करते हैं। उपनिषद हमें धर्म अर्थ काम व मोक्ष चारों पुरुषार्थो से अलंकृत करते हैं। श्रेष्ठ आचरण, ज्ञान, सत्य, तप, दान व त्याग की भावना आदि अनेक उत्तम जीवन मूल्य है, जो ईशोपनिषद के प्रथम मंत्र में जीवन मूल्य को स्थापित करते हैं। उपनिषदों में वर्णित चिरंतन मूल्य मानव जीवन को स्थायित्व प्रदान करने के साथ लोक बंधुत्व व विश्व बंधुत्व को जागृत करता है। मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, यह कनेप निषद के सूत्र सामाजिक समरसता के स्रोत हैं ।

कठोपनिषद में यमाचार्य कहते हैं न वित्तेन तर्पणयों मनुष्यः । अर्थात् धन से मनुष्य कभी भी तृप्त नहीं होता। उपनिषद चिंतनशील ऋषियों की ज्ञान चर्चाओं का सार है। मानव जीवन के उत्थान के समस्त उपाय उपनिषदों में वर्णित हैं। ईश, केन, कठ, प्रश्न, मुंडक मांडूक्य ऐतरेय, तैतरीय, छादोग्य, श्वेताश्वतर, बृहदारण्यक – इन 11 प्रमाणिक उपनिषदों में स्वर्णिम मानव जीवन मूल्यों का वर्णन उपलब्ध है। आदि गुरु शंकराचार्य ने इन्हें प्रमाणिक मानकर ही इनका भाष्य किया था।

संसार में रहते हुए भौतिक पदार्थो के भोग के साथ त्याग की भावना का सूत्र उपनिषद में जीवन के कल्याण का सूत्र है। सत्यम वद, धर्मम् चर जैसे उपनिषद के वेद वाक्यों द्वारा अनुसरणीय मूल्यों का पालन करके परिवार तथा समाज के वातावरण को श्रेष्ठ बनाया जा सकता है। वृहदारण्यक उपनिषद् में प्रजापति द्वारा दमन अर्थात् आत्म नियंत्रण की, दान की भावना तथा दया एवं करुणा की भावना को चिरंतन मूल्य के रूप में समावेशित किया गया है। क्योंकि व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आकलन उसके जीवन मूल्यों से किया जाता है ।

उपनिषदों के स्वर्णिम चिंतन ने पाश्चात्य जगत की बड़े–बड़े तत्वज्ञ विद्वानों को प्रभावित किया है। महान दार्शनिक शोपेन हावर का कहना था – 'मृत्यु के भय से बचने, मृत्यु की पूरी तैयारी करने, ब्रह्म को जानने के इच्छुक जिज्ञासुओं के लिए उपनिषदों के अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग मेरी दृष्टि में नहीं है।' जीवन के सुख–दुख, उदासी के मौकों पर उपनिषद हमें राह दिखाते हैं। ऑफिस पॉलिटिक्स में भी उपनिषद सहायक होते हैं । छोटी–छोटी कथाओं के माध्यम से उपनिषद बड़ी और गूढ़ बातों का को सह. जता से समझाते हैं। यह उपनिषदों का ही प्रभाव है कि भारत में आज भी समाज नाम की संस्था बिना कार्यालय के सुचारू रूप से चल रही है ।

आज जब चारों तरफ आतंकवाद गैंग रेप घोटाले की राजनीति में मानवता सिसक रही है, बच्चों का बचपन निराशा के अंधकार में घिरा हुआ है, ऐसे में उपनिषदों के वेद वाक्य ही व्यक्ति को सद्बुद्धि व सन्मार्ग के लिए प्रेरित करते हैं। उपनिषद ही आज के स्वस्थ समाज व जगत की दृढ़ आधारशिला है। आज भारत विश्व गुरु बन चुका है और पूरा विश्व उन्नति और प्रतिष्ठा के लिए भारत की ओर टकटकी लगाए देख रहा है ।

संदर्भ –
1. हिंदुधर्मकथा.कॉम
2, जागरण.कॉम

ईश्वर दो ऐसा वरदान

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा
फतेहाबाद, आगरा

जगमगाता दीप मैं बन सकूं,
हर हृदय में स्नेह मैं भर सकूं ।
प्रीति की रोशनी हर किसी को दे सकूं ।।
ईश्वर दो ऐसा वरदान...

जग से सारा तम मैं मिटा सकूं,
तेज आंधियों से मैं लड़ सकूं ।
डूबते को किनारे तक पहुंचा सकूं ।।
ईश्वर दो ऐसा वरदान...

जगहित गरल मैं पी सकूं,
दुनिया को अमृत मैं दे सकूं ।
दुःखी हृदय में मैं उल्लास भर सकूं ।।
ईश्वर दो ऐसा वरदान...

राष्ट्रहित हंसते–हंसते प्राण मैं तज सकूं ,
दुश्मन से अंतिम सांस तक मैं लड़ सकूं।
भारत भू का सम्बल बन सकूं ।।
ईश्वर दो ऐसा वरदान...

गीता का पावन संदेश

डॉ. हनुमान प्रसाद उत्तम
स्वतंत्र लेखन
योग. प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ
(आयुर्वेद रत्न)
कानपुर नगर, उत्तर प्रदेश

सत्य विरोधाभासी है। किसी भी वस्तु को जब हम अलग–अलग कोण से देखते हैं, तो वह हर कोण पर हमें भिन्न दिखती है, जब हम उसे समग्रता में देखते हैं, तभी उस वस्तु का सत्य उद्घाटित होता है। चूंकि श्रीमद्भगवद्गीता सत्य का उद्घाटन करती है, इसलिए वह भी विरोधाभासी प्रतीत होती है। लेकिन हम आप तभी समझ सकते हैं, जब आप इसे समग्रता में देखें। एक बिंदु पर कृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि कर्म सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और कर्म किए बिना कोई भी लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकता। बाद में वे कहते हैं कि ज्ञान श्रेष्ठतम है। आगे जाकर कृष्ण अर्जुन से कहते हैं, 'बुद्धिमान वही है, जो 'कर्म' में 'अकर्म' और 'अकर्म' में 'कर्म' को देखता है।' इसका अर्थ है, भले ही आपने कुछ न किया हो, फिर भी 'कुछ नहीं' करके भी आप कुछ कर रहे हैं। यदि आप कुछ करते हैं तो भी आपने कुछ नहीं किया, क्योंकि 'कुछ और भी हो सकता था' या 'आप कुछ और कर सकते थे।' भगवद्गीता के छठे अध्याय में उन्होंने अर्जुन से कहा, चूंकि वह भ्रमित हैं, इसलिए वार्ता करने का कोई लाभ नहीं है। वह उन्हें ध्यान करने के लिए कहते हैं कहते हैं, 'अर्जुन योगियों में वह सबसे महान है जो मुझे अपने हृदय में रखता है, चाहे वह ध्यान करें या न करें। वह वास्तविक योगी है, क्योंकि वह जो कुछ भी कर रहा है, उसमें मैं उसके साथ हूं।' विरोधाभास यहीं खत्म नहीं होते। कृष्ण कहते हैं, 'अर्जुन, मुझे कोई प्रिय नहीं है, ऐसा कोई भी नहीं है, जिसे मैं प्रेम करता हूं।' और फिर उन लोगों की पूरी सूची देते हैं, जिन्हें वे वास्तव में प्रेम करते हैं। एक अन्य उदाहरण में, कृष्ण अर्जुन को कर्म के फल की कामना किए बिना कर्म करने के लिए कहते हैं। फिर वे अर्जुन को प्रकृति के नियम के अनुसार कार्य करने को कहते हैं। वह अर्जुन का ध्यान कर्म के फल की ओर ले जा रहे हैं, लेकिन फिर वह उन्हें कर्म के फल की चिंता न करने के लिए भी कहते हैं।

कृष्ण अर्जुन के प्रिय मित्र के समान थे, लेकिन कृष्ण उन्हें एक क्षण में दिखाते हैं कि वह अनंत हैं। वे अर्जुन से कहते हैं, 'तुम ज्ञान चक्षु के बिना मुझे नहीं देख सकते, अतः अब मैं

तुम्हें ज्ञान की एक दिव्य दृष्टि दूंगा, जो मैंने युगों से किसी को प्रदान नहीं की।' इसके साथ वह उन्हें एक दृष्टि, एक प्रकाश प्रदान करते हैं। उस क्षण अर्जुन को संपूर्ण ब्रह्मांड कृष्ण के रूप में प्रतीत होता है। अर्जुन देखते हैं कि सारी सृष्टि, पर्वत, नदियां, भूत, वर्तमान और भविष्य कृष्ण में विलीन हो रहे हैं। उनका सारा जीवन, सारा ब्रह्मांड, स्मृतियां और हर वस्तु एक चलचित्र की तरह गतिमान होती हैं। भयभीत होकर अर्जुन याचना करते हैं, हे कृष्ण ! कृपया मुझे अपना सरल, स्वाभाविक और मैत्रीपूर्ण रूप दिखाएं। मैं अपने मित्र को देखना चाहता हूं।' इसे सार्वभौमिक दृश्य या विश्वरूप दर्शन कहा जाता है।

इसके बाद, कृष्ण अर्जुन को उन सिद्धांतों व नियमों को बताते हैं, जिनके अंतर्गत ब्रह्मांड काम करता है। पुनः वे संन्यास के विषय में और मन को केंद्रित कैसे करें, इस पर वार्ता करते हैं। उदाहरण के लिए, किसी घटना या किसी बात को केवल उसी के रूप में देखा जाना चाहिए। लेकिन मन इससे जुड़ जाता है और आप विचलित हो जाते हैं। किसी घटना का अंत होने पर आपको राहत की अनुभूति होती है। आप अपने भीतर शांति का अनुभव करते हैं। शांति मूल स्वभाव है। जब आप अपने केंद्र में होते हैं, आप शांत होते हैं।

अर्जुन कृष्ण से पूछते हैं, 'आप जो कहते हैं, वह आनंददायक है, लेकिन यह सरल नहीं है। मन को नियंत्रित करना कठिन है। क्या कोई हवा को नियंत्रित कर सकता है ?' तब कृष्ण कहते हैं, यह कठिन है, लेकिन असंभव नहीं। अभ्यासेन तुकौन्तेय– अभ्यास, वैराग्य और अपने केंद्र में लौटने से तुम इस में सफल होंगे।'

कृष्ण ने सब कुछ अजमाया। अंत में विश्वरूप दर्शन ने अर्जुन को प्रभावित किया, किंतु केवल दर्शन से भी लोग नहीं बदल सकते। यही कारण है कि जब कृष्ण ने अर्जुन को अनंत दर्शन की ओर अग्रसर किया, तब वह भक्ति के विषय में बताते हैं और वह अन्य विषयों पर आते हैं, सृजन और यहां तक कि भोजन के बारे में भी। किंतु जब अर्जुन कहते हैं, 'मैं समर्पण करता हूं' तब कृष्ण कहते हैं, मैं कुछ नहीं कर सकता, तुम स्वयं सोच–विचार कर निर्णय लो और वही करो जो तुम्हारे लिए सबसे अच्छा है। मैंने जो कुछ कहा है, उस पर विचार करो, फिर कर्म करो।' अर्जुन कहते हैं, 'अब मेरे मन में पूर्ण स्पष्टता है।' इस प्रकार अर्जुन को उस लक्ष्य तक लाने में कृष्ण को 18 अध्याय बोलने पड़े। कृष्ण इसे पहले अध्याय में कह सकते थे, लेकिन जिस तरह यह ज्ञान प्रकट हुआ है, वह सुंदर है। सभी पक्षों से देखे जाने पर सब कुछ विरोधाभासी प्रतीत हो सकता है, किंतु वास्तव में यही सत्य है।

भारत मां के चरणों में

डॉ. सुमन मिश्रा
झांसी

वो भारत माँ के चरणों में, थे शीश चढाकर चले गये।
अपने यौवन के पौरुष का, मकरंद लुटाकर चले गये।।
है पुलवामा की धरती पर, दुश्मन ने छल से वार किया।
कुछ कश्मीरी गद्दारों ने,सब तहस नहस कर खार किया।।

अब मौन लिए क्यों बैठो हो,.कुछ निर्णायक संवाद करो।
अब जगो देश के नेताओ,तुम इसका कुछ प्रतिवाद करो।।
अब समय नही समझौते का, .मत वादों की बौछार करो।
जो वीर शहीद हुए अपने,अब उस पर आज विचार करो।

वे भारत माँ की सेवा में,.....हैं चढ़ा गये तन मन अपना।
उनकी गौरव गाथाएं को,...अब गायेगा जन गण अपना।।
जो लहू धरा पर चढा गये ,.....वे वीर पुत्र थे अभिमानी।
जो सौरभ अपना लुटा गये,.....वे धीर पुत्र थे सैनानी।।

इन भारत माँ के वीरों ने, इस भू का कितना मान किया।
हँसते हँसते कुर्बा होकर,..नित प्राणों का बलिदान दिया।।
अब कपट धूर्त उन्मादों का,..जब तक संहार नही होगा।
तब तक तोपों की गर्जन से,...सच्चा प्रतिकार नही होगा।।

वे देश की खातिर हँस–हँस कर,फाँसी पर झूला करते है।
हम क्षमा शीलता से अपने ,.....दुश्मन को भूला करते है।।
इन भारत माँ के वीरों को,.....मै श्रद्धा शीश झुकाती हूँ।
जो लिपट तिरंगे में आये,....कुछ उनको 'सुमन' चढ़ाती हूँ।।

सजते पल्लव

श्रीमती सुषमा सागर मिश्रा
उपसम्पादक (अध्यात्म संदेश)
सेवानिवृत्त प्रधानाचार्या
राजकीय विद्यालय, लखनऊ

अस्पताल के बिस्तर पर पड़े गुरुजी के कृशकाय शरीर को देखकर मेरी अंतरात्मा हिल गई और आँखें अश्रुपूरित हो गई वे कुछ बोलने की स्थिति में नही थे। मेरी आँखों के समक्ष घूम गया उनका दस वर्ष पुराना चेहरा जब वे एक सम्मानित कॉलेज में अंग्रेजी विषय के प्रवक्ता के रूप में मेरे गुरू थे। यह मेरा सौभाग्य ही था जो मैं उन जैसे विद्वान, आकर्षक व्यक्तित्व, सौम्य वेशभूषा, अत्यन्त मृदुभाषी परन्तु अति स्वाभिमानी साथ ही अपने विषय के प्रकाण्ड पंडित का शिष्य था। अंग्रेजी विषय के साथ–साथ हिंदी विषय में भी उनकी योग्यता की कोई सानी नहीं थी। विद्यालय के प्रत्येक सांस्कृतिक, शैक्षिक कार्यक्रम में उनकी सहभागिता सर्वोपरि रहती थी। सच पूछें तो मेरी निगाह में वो संपूर्ण व्यक्तित्व के धनी, विद्वता से परिपूर्ण एक आदर्श शिक्षक थे। क्योंकि मैं उनके अच्छे शिष्यों में से एक था तो कभी–कभी उनके घर भी जाना हुआ करता था उनकी पत्नी अर्थात गुरु माता भी उन्हीं की भांति अत्यंत सौम्य और ममतामयी थी, वो जब अपने आशीर्वाद भरे हाथ मेरे सर पर रख कर बड़े प्यार से कहती थी कि बेटा आओ गर्म गर्म पराठे तुम भी खालो तो मैं उनके स्नेह से अभिभूत हो जाता था, और मुझे अपनी माँ की याद जाती थी जिन्हें मैं अपने बचपन में ही खो चुका था। कभी कभी मैं सोचता था 'कितना सुखी परिवार है लक्ष्मी, सरस्वती एवं मान–सम्मान सभी कुछ तो ईश्वर ने उपहार में दिया है, मेरे गुरूजी एक सफल जीवन जी रहे हैं।' एक बात लिखना मैं भूल गया था कि गुरुजी का एक पुत्र भी था जो लगभग मेरी ही उम्र का था।

गुरु जी की सेवानिवृत्ति के पश्चात भी मैं उनके संपर्क में बना रहा वे जहां कहीं भी काव्य गोष्ठियों अथवा सामाजिक कार्यक्रमों में जाते थे तो मुझे अवश्य बुलाते थे और मैं भी समय निकाल कर उनसे मिलने और उन्हें सुनने अवश्य पहुंच जाता था। जब तालियों की गड़गड़ाहट से उनका सम्मान होता था तो मैं भी स्वयं को गौ. रवान्वित महसूस करता था क्योंकि वह मेरे शिक्षक थे। पढाई पूरी करने के बाद मैं नौकरी की तलाश में जुट गया इस बीच गुरुजी से पता चला कि उनके बेटे को एक अच्छी कंपनी में नौकरी मिल चुकी थी अब वे उसका विवाह करना चाहते थे, मै गुरुजी से मिलने और उनके बेटे को बधाई देने उनके घर गया तो इस बार पता नहीं क्यों मुझे कुछ खटक रहा था ,घर में खुशी के कोई लक्षण नहीं दिख रहे थे गुरु जी ने बहुत दुखी मन से बताया कि बेटे ने एक बड़े घर की बेटी से प्रेम विवाह कर लिया, उसे उसकी ससुराल से एक आलीशान मकान मिला है और वह दोनों वहीं रहने लगे हैं। यह सुन कर मैं भी सकते में आ गया तभी गुरुमाता ने धीरे से बताया कि पिता पुत्र का संवाद लगभग समाप्त हो चुका था अपने पुत्र से दूर होने की पीड़ा उनकी स्नेहिल आंखों से झलक रही थी, हर मां की तरह उन्होंने भी अपने बेटे बहू को लेकर कुछ सपने सजोए थे जो चकनाचूर हो गए थे। बड़े भारी मन से उन्हें सांत्वना दे कर मैं अपने घर वापस आ गया।

अन्ततः मुझे भी बड़ो के आशीर्वाद से एक महाविद्यालय में प्रवक्ता की नौकरी मिल गई मै बहुत खुश था, मैने यह खुशखब. री अपने पिताजी और गुरुजी को बताया, तो दोनों ने मुझे मेरे उज्जवल भविष्य एवं सफल जीवन का आशीर्वाद दिया। सच है कि माता पिता और गुरुजन सदैव सच्चे हितैषी होते हैं। मेरी नौकरी की व्यस्तता के कारण मेरा गुरुजी से मिलने का सिलसिला धीरे–धीरे कम होने लगा, परन्तु कभी कभी फोन से बात हो जाती थी ।

अचानक एक दिन पता चला कि गुरुमाता इस नश्वर संसार को छोड़ कर ईश्वर की हो चुकी, मैं बहुत आहत हुआ, अपनी मां को तो मैं बचपन में ही खो चुका था ऐसा लगा था जैसे सर पर से आसमान ही हट गया हो। मैं तुरंत गुरु जी के घर की ओर रवाना हो गया जोकि मेरे घर से लगभग 10 किलोमीटर की दूरी पर था, फिर भी मैं जल्दी से जल्दी पहुँचना चाहता था बार–बार मेरी आंखों के सामने कभी गुरुजी का दुखी चेहरा तो कभी गुरुमाता का मुस्कुराता हुआ चेहरा आ जाता था, खैर जब मैं गुरु जी के घर पहुंचा तो मैंने देखा कि कुछ रिश्तेदार आ चुके थे और कुछ आ रहे थे, गुरु जी अपनी पत्नी की मृत देह के पास सर झुकाए पता नहीं क्या सोच रहे थे। मेरे पहुंचने पर जैसे ही उन्होंने मुझे देखा उनकी आंखें डबडबा आई , ऐसा लग रहा था कि उनके अंदर की व्यथा अश्रु रूप में आंखों के बाहर आना चाह रही हो, मैं चुपचाप उनके पास जाकर बैठ गया था, तभी मैने देखा कि उनके सुपुत्र अपनी पत्नी के साथ दूर चुपचाप बैठे थे जैसी सामाजिक औपचारिकता पूरी कर रहे हों, मां जैसी अनमोल चीज खोने के बाद भी सामान्य लग रहे थे मैं उनके अन्तःमन को नहीं समझ पाया, जबकि मेरा तो बच्चों की तरह रोने का मन कर रहा था। सामाजिक परंपरा के अनुसार गुरुमाता के शरीर को पंचतत्व में विलीन हो जाने के बाद सभी अपने अपने जीवन में व्यस्त हो गया और मैं भी स्वयं को सामान्य करने की कोशिश करने लगा। बीच बीच में मैं गुरु जी से मिलने जाता था बल्कि जब भी खाली समय मिलता था मैं उनसे जरूर मिलता था इस बीच मेरा विवाह भी हो गया था और अब मैं परिवार सहित उनसे मिलने जाता था क्योंकि गुरु माता के जाने के बाद उनके जीवन में अथाह शून्यता आ गई थी। बेटा– बहू पहले ही अलग रहते थे।

धीरे–धीरे समयाभाव के कारण उनसे मिलने का अन्तराल बढ़ता चला गया, केवल फोन पर ही बातें हो जाती थी और हालचाल मिलता रहता था । परन्तु पिछले कुछ समय से उनका कोई भी फोन भी नहीं आया और मैं भी उनसे मिलने नहीं जा पाया। एक दिन मैंने उनको फोन लगाया तो आवाज एक अप. रिचित की सुनाई पड़ी, जब मैंने उनसे गुरुजी के बारे में जानने की कोशिश की तो जवाब मिला 'अब वे यहां नहीं रहते हैं उनके बेटे ने यह घर मुझे बेच दिया है और वह अपने बेटे के साथ अन्यत्र कहीं रहने चले गए है।' मैं अवाक् था गुरु जी अपनी सभी बातें मुझसे साझा करते थे, अचानक बिना मुझे बताएं इतनी बड़ी दुनिया में कहां चले गए? मैं उन्हें कहां और कैसे खोजूंगा ? यह सोच सोच कर मैं परेशान हो रहा था तभी मेरी पत्नी ने कहा की आप उनके घर जाकर पूरी वास्तविकता जानने की कोशिश करिये, मुझे उसकी बाद समझ में आ गई और मैं पहुंच गया उनके उसी घर में जिसने वे इतने वर्षो से रहते थे ,मैंने देखा कि नेम प्लेट बदल गई है रंगरोगन बदल गया, ऐसा महसूस हो रहा था कि रहने वाले लोग भी बदल गए होंगे, मैने कॉलबेल दबाई तो अंदर से एक संभ्रांत व्यक्ति बाहर निकले और मेरी ओर प्रश्नवाचक दृष्टि से देखने लगे, मैंने अपना परिचय दिया और गुरुजी से अपना संबंध बताया तो उन्होंने बताया 'उनके बेटे ने यह मकान मुझे बेच दिया और अब वह कहां रहते हैं इसकी जानकारी मुझे नहीं है ,हां एक नंबर है जो उन्हीं का है वह मैं आपको दे देता हूं आप उस नंबर पर उनसे बात कर सकते हैं।' बिना समय गवाएं मैने नंबर अपने मोबाइल में ले लिया और उन्हें धन्यवाद कह कर उनके घर से वापस हो गया, मन में तसल्ली थी कि गुरुजी तक पहुंचने का एक सूत्र तो मुझे मिल ही गया था।

घर आकर मैंने उसी नंबर पर जब कॉल लगाई तो दो बार में तो किसी ने उठाया ही नहीं तीसरी बार में फोन तो उठा, मगर आवाज किसी और की थी जब मैंने गुरुजी के बारे में जानने की कोशिश की तो आवाज आई कि ऐसा कोई व्यक्ति यहां नहीं रहता है आपने गलत नंबर मिलाया है। मुझे लगा कि मैं गहरे गड्ढे में गिर गया हूं अब क्या करूं, समझ में नहीं आ रहा था। उनके विद्यार्थियों में मैं ही अब तक उनके संपर्क में था, उनके पुत्र से भी मेरा कोई संपर्क नहीं था मैं कैसे उनका पता लगाऊ, वह कहां खो गए मेरे गुरुजी। अचानक मेरे विचार में आकर क्यों न पुलिस की मदद ली जाए और यह सोचकर मैं पहुंच गया नजदीकी थाने में और थाना प्रभारी को पूरी स्थिति से अवगत करवा कर जिस नंबर से बात हुई थी उसकी पूरी तहकीकात कराने का निवेदन किया, मुझे उन्होंने पूरी मदद की सांत्वना दी। मैं परेशान हाल घर वापस आगया फिर

ठंढे मन से सोचने लगा कि आखिर मैं क्यों इतना परेशान हूं, गुरुजी को पेंशन मिलती होगी फिर उनके पुत्र को उनकी चिंता होनी चाहिए। मगर पुनः उनका तेजस्वी व्यक्तित्व और गुरुमाता की ममता को याद करके परेशान हो जाता था पता नहीं क्यों मेरी अन्तरात्मा कहती थी कि वो किसी परेशानी में हैं, अब केवल मेरे गुरु ही नहीं बल्कि मेरे पथप्रदर्शक एवं मेरे आदर्श हैं और मुझे अपने गुरु के ऋण को अदा करना मेरा कर्तव्य था।

लगभग एक सप्ताह बाद मेरे फोन की घंटी बजी और मैं दौड़ गया अपने फोन की ओर, आशा के अनुरूप जानकारी मिली कि 'गुरु जी का पता चल गया है और अधिक जानकारी के लिए मुझे थाने में बुलाया गया है', मेरे तो जैसे पंख ही लग गए थे और मैं भागा–भागा पहुंच गया थाने, मुझे ऐसा लग रहा था कि शायद मुझे कोई धन मिलने वाला था ,सच मेरे गुरु जी मेरे धन ही थे, वे मेरे गौरव थे। थाने पहुंचकर जो जानकारी मुझे मिली और कलेजा हिलाने वाली थी पुलिस वालों ने बताया कि आज यदि हम आपके गुरु जी को ढूँढ पाये है तो इसका पूरा श्रेय आपको जाता है क्योंकि आपने समय रहते हमें स्थिति से अवगत करवाया वरना आपके गुरुजी का जीवन खतरे में था क्योंकि वो बदमाशों के चंगुल में फंस गये थे, आपके गुरुजी के पुत्र ने वह बड़ा मकान बेचकर गुरुजी के लिए एक कमरे का फ्लैट खरीद दिया था जिसमें वे अकेले ही रहते थे साथ ही भोजन के लिए टिफिन व्यवस्था कर उनके बेटे ने अपने कर्तव्य की इति कर ली थी। एक लड़का उन्हें प्रतिदिन टिफिन देने आता था, जिसने धीरे–धीरे गुरुजी से मेलजोल बढ़ाना शुरू कर दिया और गुरुजी भी अपने उम्र के चौथे पहर में अकेलेपन से दुखी तो थे ही, अपने दिल के दर्द को उससे साझा करने लगे थे। समय अपनी गति से आगे बढ़ने लगा और साथ ही उस लड़के की घुसपैठ भी बढ़ती चली गई, टिफिन लाने के साथ–साथ उनके और भी छोटे–छोटे काम कर दिया करता था जिसका परिणाम यह हुआ कि वो उस लड़के पर विश्वास करने लगे, धीरे–धीरे वह लड़का उनका बैंक से पैसा निकालने और जमा करने का काम भी करने लगा धीरे–धीरे लालच वश वह उनके विश्वास का दुरुपयोग करने लगा। अंततः स्थिति यह आ गई कि वह गुरुजी पर हावी होने लगा, वह उनको किसी से मिलने नहीं देता था और यदि कोई मिलने आता भी था तो यह कह कर कि 'वे अस्वस्थ हैं इस कारण मिलना नहीं चाहते हैं', उसे दरवाजे से ही वापस कर देता था यहां तक कि उनका फोन भी उनसे ले कर अपने अधिकार में कर लिया था कि कोई फोन पर उनसे बात नहीं कर सकता था अब मेरी समझ में आया कि कई बार प्रयास करने के बाद भी मेरा फोन क्यों नहीं उठ रहा था ,संक्षेप में कहें तो उन्होंने गुरु जी की स्थिति को भांप कर उसका फायदा उठाना शुरू कर दिया था और आगे चलकर उनकी जो भी अग्रिम योजना हो ईश्वर की कृपा से समय से पहले इनका भांडा फूट गया, अब वह लड़का पुलिस कस्टडी में था और गुरुजी अस्पताल में, क्योंकि उनकी स्थिति खराब देखभाल के कारण बहुत ही चिंतनीय हो गई थी। मैं सोचने लगा कि हमारे समाज में पुत्र के जन्म पर खुशियां मनाई जाती हैं यह माना जाता है कि पुत्र जन्म से बुढ़ापा सुरक्षित होगा और मोक्ष की प्राप्ति होगी मगर एक पुत्र के पिता की ऐसी दुर्गति देखकर मेरे सारे मोहभंग हो गये। इतने दिनों में क्या एक बार भी वह उन्हें देखने और जानने नहीं गया कि उसके अनमोल पिता किस स्थिति में है। तभी थाना इंचार्ज ने एक हस्तलिखित कागजों का बड़ा सा बण्डल लाकर मेरे सामने मेज पर रख दिया, मैंने बण्डल खोल कर देखा तो उसमें उनके द्वारा लिखित हिंदी और अंग्रेजी की कविताओं का विशाल संग्रह था जिसे उन्होंने छपवाने के लिए रखा था मगर उस दुष्ट ने उनका यह काम न करके उन्हें धोखे में रखा और किताब छपवाने के बहाने से उसे पैसा ऐंठता रहा। मैं भावावेश में उसको बण्डल को देखता रहा क्योंकि वह गुरु जी की अनमोल सम्पति थी, फिर कुछ सोंच कर मैंने उस बण्डल को अपने हाथों में उठाया तो ऐसा लग रहा था कि मैं उन्हें ही स्पर्श कर रहा हूँ ।

कागजों का बण्डल घर पर रखकर और पत्नी को स्थिति से अवगत करवा कर मैं पहुंच गया उसी अस्पताल में जहां गुरुजी एडमिट थे। डाक्टर से पूछने पर उन्होंने बताया कि कोई चिन्ता की बात नहीं है, समय रहते इनका यहां आना बहुत अच्छा रहा, अधिक तनाव और खराब सेहत के कारण इनकी यह दशा हो गई है, कुछ ही दिन के इलाज में ये स्वस्थ हो जाएगें। यह सुन कर मुझे बहुत तसल्ली हुई तभी याद आया कि दरोगा जी ने गुरुजी का मोबाइल मुझे दिया था जोकि उसी लड़के के पास से बरामद हुआ था, मैंने फोन निकालकर कोशिश कर उनके बेटे का नंबर ढूंढ कर उसे भी गुरुजी की स्थिति से अवगत करवाया और उससे अस्पताल आने को कह कर मैं कुर्सी पर बैठ कर सोचने लगा कि अब आगे क्या करना है, थोड़ी देर बाद उनका बेटा– बहू भी आ गए जिन्हें देखकर मुझे बहुत खुशी हुई और गुस्सा भी आया, मन तो बहुत कुछ कहना चाह रहा था मगर समय की नजाकत को देखते हुए बस इतना ही कह पाया कि भैया देखो गुरुजी की क्या हालत हो गई है क्या आपने कभी इनकी सुध नहीं ली? अपराध बोध से ग्रसित बेटे ने जवाब दिया कि मैं मिलने तो कई बार गया मगर हर बार उनके साथ रहने वाले लड़के ने यह कहकर कि वह आपसे बात नहीं करना चाहते हैं न ही मिलना चाहते हैं, मुझे वापस कर दिया और मैं भी पापा के क्रोध के डर से अंदर जाने की हिम्मत नहीं कर सका यही मेरी भूल थी,इतना कहने के साथ ही पश्चाताप के अश्रु आंखो में छलक आये। मैने उसे सान्त्वना दी और हम दोनों जुट गए गुरु जी की सेवा में। चार –पांच दिन की देखभाल और उचित इलाज से गुरुजी अपने पैरों पर खड़े होकर चल सकने में सक्षम हो गए थे। खुशी की बात यह थी कि भाभी अर्थात गुरुजी की बहू ने उनकी सेवा में कोई कसर नहीं छोड़ी, फलतः डाक्टर ने उन्हें घर ले जाने की अनुमति दे दी। बेटे की आंखों में आंसू थे, उन्होंने गुरुजी से अपने घर चलने की इच्छा जाहिर की मगर गुरुजी ढहरे स्वाभिमानी वे अभी भी अपने बेटे से नाराज थे,वहां जाने से इनकार कर दिया अतः हम दोनों उन्हें उसी घर में ले आये जिसको इस बीच साफ सफाई करवा दिया गया था, हां उनके बेटे ने वादा जरूर किया कि सप्ताह में एक बार अवश्य मिलने आएगा। इसी समयान्तराल में गुरुजी का काव्य संग्रह भी छप कर तैयार हो चुका था जिसे मैंने अपने महाविद्यालय में गुरुजी और उनके पुत्र एवं पुत्र वधू की उपस्थिति में लोकार्पण करवा दिया, मंच पर बैठे

मेरे गुरुजी पुनः हरे–भरे पत्तो से सजे वृक्ष की भांति खुश और प्रफुल्लित नजर आ रहे थे, उनका सपना जो साकार हो रहा था और मैं भी उन्हें खुश देख कर मन ही मन में प्रफुल्लित हो रहा था, मन में एक सन्तोष था कि मै गुरुऋण का कुछ अंश अदा कर स्वयं को हल्का महसूस कर रहा था। कार्यक्रम के समापन पर हम दोनों उन्हें मंच से नीचे ले आये, तभी उन्होंने मुझे अपने गले लगा लिया मैं उनसे सहज स्नेह से गदगद हो गया और तभी भइया और भाभी ने गुरुजी का चरण स्पर्श कर साथ ही अपनी गलतियों को स्वीकार कर उनसे माफी मांगी , और सहृदय गुरुजी ने तुरत अपने बेटे बहू को आशीर्वाद दिया और बेटे को अपने हृदय से लगा लिया अब उनके मध्य जमी अलगाव की बर्फ धीरे धीरे पिघलने लगी। मुझे लगा कि गुरु जी ने अपने बेटे बहू को दिल से माफ कर दिया था।

सभी प्रियजनों से मैं कहना चाहती हूं कि कहानियां हमारे समाज से ही निकल कर आती हैं, यह कहानी भी हमारे समाज की कड़वी सच्चाई को उजागर करने की कोशिश करती है। माता–पिता बहुत अनमोल सम्पति होते हैं बच्चों को कभी ऐसा कोई काम नहीं करना चाहिए जिससे उनके जन्मदाता का हृदय दुखित हो साथ ही मैं निवेदन करना चाहती हे कि बड़े भी उनकी खुशी में शामिल हों उन्हें अपने आशीर्वाद से सिंचित कर उनका मार्गदर्शन करते रहें और सदैव उनसे जुड़े रहें जिससे कोई बाहर वाला उनके अकेले पन का लाभ उठा कर उनका शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक रूप से शोषण न कर सके। आशा है कि मेरी कहानी ने आपके हृदय को स्पर्श किया होगा।

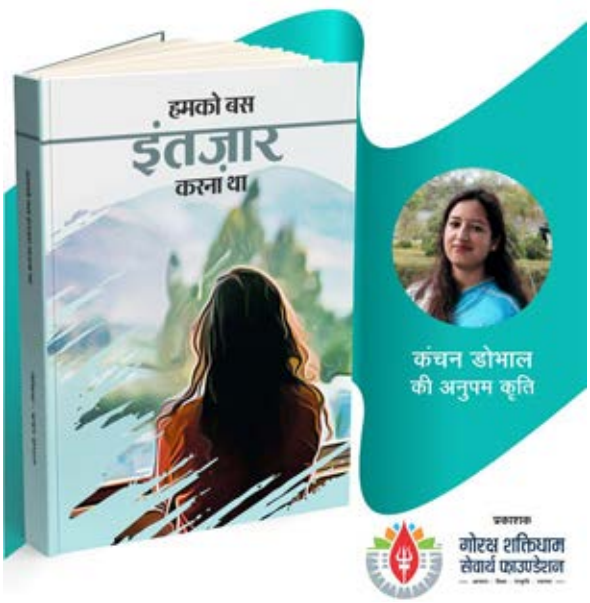

जागरण का भाव भर दो

डॉ. विष्णुप्रसाद पाठक
लखनऊ, उत्तर प्रदेश

राष्ट्र की नवचेतना में , जागरण का भाव भर दो।
देशहित अब युवामन में, लगनऔर उत्साह भर दो।
नीति नैतिक मूल्य सारे, ज्ञान और विज्ञान भर दो।
देश की रक्षा करें हम,मातृप्रेम प्रकाम भर दो ।
राष्ट्र की नवचेतना में,जागरण का भाव भर दो।।।

नई शिक्षा नीति से, नव ज्ञान नव आयाम भर दो।
राष्ट्र अभ्युत्थान में अब, युवा जन में जोश भर दो।
सृजन को नव पंख देकर भाव में अनुराग भर दो।
राष्ट्र की नवचेतना में ,जागरण का भाव भर दो।2।।

बेटा बेटी पढ़े सब साक्षरता का प्रकाश भर दो ।
राष्ट्र चिंतनशील हो, संवेदना सद्भाव भर दो।
भाव भाषा व्यंजना में, मातृ भाषा भाव भर दो।
राष्ट्र की नवचेतना में जागरण का भाव भर दो।।3।।

बढ़चलें कर्तव्यपथ पर, कर्मपथ पथिकों से भर दो।
संस्कारों पर चलें हम, लोक में सम्मान भर दो।
आत्मनिर्भर बनें जनजन, राष्ट्र संसाधन से भर दो।।
राष्ट्र की नवचेतना में जागरण का भाव भर दो।।4।।

GSS FOUNDATION

वृन्दावन की भूमि पर सारस्वत सम्मान

तृतीय

अखिल भारतीय सारस्वत सम्मान समारोह

जनवरी 2024 | वृन्दावन

यह सम्मान राष्ट्र निर्माण एवं जनकल्याण को समर्पित हिंदी भाषी साहित्यकारों, शिक्षकों, चिकित्सकों, समाज–सेवकों, वैज्ञानिकों, लघु उद्यमियों, लेखकों, कवियों, पत्रकारों, शोधार्थियों अथवा अन्य विधाओं की प्रतिभाओं को प्रदान किया जाएगा, जो अपनी प्रतिभा–सेवा के द्वारा राष्ट्र की शैक्षणिक, आर्थिक, तकनीकी, सामाजिक, कला एवं संस्कृति की उन्नति में अपना निरंतर योगदान दे रहे हैं।

महायोगी गोरक्षनाथ लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड– 2024

(आवेदक के लिए न्यूनतम आयु सीमा : 55 वर्ष)

यह अवार्ड विश्व में आध्यात्मिक योग ज्ञान के क्षेत्र में अग्रणी महायोगी गुरु गोरक्षनाथ जी की स्मृति का सम्मानित प्रतीक चिन्ह है। यह प्रतिष्ठित अवार्ड योग्य व्यक्तियों को सम्मानित कर उनके उत्कृष्ट योगदान को मान्यता देता है, जिन्होंने अपने जीवन में संबंधित कार्य क्षेत्रों में असाधारण योगदान देकर उपलब्धियाँ अर्जित की हैं।

महायोगी गोरक्षनाथ लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

सारस्वत सम्मान एवं लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड प्राप्तकर्ताओं को फाउण्डेशन द्वारा आयोजित भव्य समारोह में उनके सम्मान के अनुरूप एक प्रशस्ति पत्र, अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया जाएगा ।

भारतवर्ष के समस्त प्रांतों से प्रविष्टियाँ आमंत्रित हैं | **प्रविष्टि भेजने की अंतिम तिथि 30 दिसम्बर 2023**

For application form : Please type : “name” - “place” -”Award Name” and send it to 7415410516

मुख्य प्रायोजक

गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फ़ाउण्डेशन

E-mail : award.gssfoundation@gmail.com

Website : www.gssfoundation.org

संपर्क सूत्र : योगी शिवनंदन नाथ | Ph. : 6266441148

25 दिसंबर पर विशेष

अटल बिहारी वाजपेयी जी की जयंती

अटल जी की कविताओं में राष्ट्रीय चेतना के तत्व

कृष्ण कुमार यादव
भारतीय डाक सेवा,
पोस्टमास्टर जनरल, वाराणसी परिक्षेत्र
वाराणसी, उत्तर प्रदेश

साहित्य राजनीति के आगे चलने वाली वह मशाल है जो उसे न सिर्फ रास्ता दिख. ाती है, बल्कि पथ भ्रष्ट होने से भी रोकती है। यही कारण है कि आजादी के दौर में तमाम साहित्यकारों–पत्रकारों ने स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई दिशा दी। यह अनायास ही नहीं है कि आजादी के शुरूआती दौर में देश के तमाम राजनेता अच्छे लेखक व बुद्धिजीवी भी रहे हैं। सत्ता और साहित्य दोनों का ही उद्देश्य अंततः जनकल्याण है,पर वक्त के साथ सत्ता और साहित्य में दूरियाँ बढ़ती गई। राजनीति में ऐसे लोगों को स्थान मिलता गया, जिनका उद्देश्य सिर्फ अपने हितों की पूर्ति करना था। साहित्य का उद्देश्य जहाँ संवेदनाओं को प्रस्फुटित करना है, वहीं राजनीति ऐसे लोगों का आश्रय बनती गई जहाँ संवाद और संवेदना दोनों ही गौण होते गए। ऐसे में राजनीति के पटल पर कवि हृदय अटल बिहारी वाजपेयी का उत्थान एक महत्वपूर्ण घटना थी। एक ऐसा राजनेता, जो सत्ता का रुख भी समझता था और उसके साथ मानवीय संवेदना की धार भी। तभी तो दार्शनिक लहजे में वह इस संवेदना को शब्द दे पाये–

सूर्य एक सत्य है
जिसे झुठलाया नहीं जा सकता
मगर ओस भी तो एक सच्चाई है
यह बात अलग है कि ओस क्षणिक है
क्यों न मैं क्षण क्षण को जिऊँ?
कण–कण में बिखरे सौन्दर्य को पिऊँ? (हरी हरी दूब पर)

कवि हृदय अटल बिहारी वाजपेयी ने इतिहास के पन्नों को बड़े करीब से महसूस किया और उस दर्द को भी व्यक्त किया, जिसे अंग्रेजों ने 'काला पानी' की संज्ञा दी। जब मैं अण्डम. ान–निकोबार द्वीप समूह में निदेशक के पद पर पदोन्नति पश्चात् गया तो वहाँ सेल्युलर जेल के भ्रमण के समय 'काला पानी' को लेकर लिखी अटल जी की कविता स्वमेव जुबां पर आ गई–

जो बरसों तक सड़े जेल में, उनकी याद करें।
जो फाँसी पर चढ़े खेल में, उनकी याद करें।
याद करें काला पानी को,
अंग्रेजों की मनमानी को,
कोल्हू में जुट तेल पेरते,
सावरकर से बलिदानी को। (जो बरसों तक सड़े जेल में)

अटल बिहारी वाजपेयी के व्यक्तित्व के कई पहलू हैं। वे न सिर्फ दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक राष्ट्र भारत के तीन बार प्रधानमंत्री रहे, बल्कि हिन्दी कवि, लेखक पत्रकार व प्रखर वक्ता भी थे। अटल जी को काव्य रचनाशीलता एवं रसास्वाद के गुण विरासत में प्राप्त हुए। उनके पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी ग्वा. लियर रियासत में अपने समय के जाने–माने कवि थे। वे ब्रजभाषा और खड़ी बोली में काव्य रचना करते थे। पारिवारिक वातावरण साहित्यिक एवं काव्यमय होने के कारण उनकी रगों में काव्य रक्त–रस अनवरत घूमता रहता था। पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी हिंदी, संस्कृत और अंग्रेजी तीनों भाषाओं के विद्वान थे, इसी कारण अटल अपने बचपन से ही भाषण–कला में निपुण हो गए थे। उन्होंने लम्बे समय तक राष्ट्रधर्म, पाचिंजन्य और वीर अर्जुन आदि राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत अनेक पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन भी किया। उनकी कुछ प्रमुख प्रकाशित रचनाएँ इस प्रकार हैं : रग–रग हिन्दू मेरा परिचय, मृत्यु या हत्या, अमर बलिदान (लोक सभा में अटल जी के वक्तव्यों का संग्रह), कैदी कविराय की कुण्डलियाँ, संसद में तीन दशक, अमर आग है, कुछ लेखः कुछ भाषण, सेक्युलरवाद, राजनीति की रपटीली राहें, बिन्दु–बिन्दु विचार। उनकी आरम्भिक रचनाओं में 'कैदी कविराय की कुण्डलियाँ' काफी प्रसिद्ध है, जो 1975–77 आपातकाल के दौरान कैद किए गए कविताओं का संग्रह था। 'न दैन्यं न पलायनम्' और 'मेरी इक्यावन कविताएँ' अटल बिहारी वाजपेयी जी के प्रसिद्ध काव्य–संग्रह थे। विख्यात गजल गायक जगजीत सिंह ने अटल जी की चुनिंदा कविताओं को संगीतबद्ध करके एक एल्बम भी निकाला था।

अपनी कविताओं के संबंध में उन्होंने लिखा, 'मेरी कविता जंग का ऐलान है, पराजय की प्रस्तावना नहीं। वह हारे हुए सिपाही का नैराश्य–निनाद नहीं, जूझते योद्धा का जय–संकल्प है। वह निराशा का स्वर नहीं, आत्मविश्वास का जयघोष है।' मातृभाषा हिंदी के प्रति उनका अनुराग जगजाहिर था। तभी तो 1977 में बतौर विदेश मंत्री, संयुक्त राष्ट्र अधिवेशन में उन्होंने सगर्व हिंदी में भाषण दिया। ऐसा करने वाले वह देश के पहले नेता बने। वह इसे अपने जीवन का सबसे सुखद क्षण मानते थे। हिंदी और हिंदुस्तान के प्रति उनका अनुराग खूब था –

शत–शत आघातों को सहकर,
जीवित हिन्दुस्तान हमारा।
जग के मस्तक पर रोली सा,
शोभित हिन्दुस्तान हमारा। (दुनिया का इतिहास पूछता)

अटल जी की रचनाओं में मानवीय संवेदना की झलक दिखा. ई देती है और वंचितों के प्रति सहानुभूति भी। तभी तो अपने जीवन की पहली कविता भले ही उन्होंने शताजमहलश के मोहपाश में लिखी, पर छलका अंततः दर्द ही–'एक शहंशाह ने बनवा के हसीं ताजमहल, हम गरीबों की मोहब्बत का उड़ाया है मज़ाक।' यही उनकी विशेषता भी थी और बड़प्पन भी कि वे हर वस्तु के पीछे छिपे मर्म को सामने ला देते थे। राजनीति के साथ–साथ समष्टि एवं राष्ट्र के प्रति उनकी वैयक्तिक संवेदनशीलता सदैव प्रकट होती थी। तभी तो वे लिख पाये –

मेरे प्रभु!
मुझे इतनी ऊँचाई कभी मत देना,
गैरों को गले न लगा सकूँ,
इतनी रुखाई कभी मत देना। (ऊँचाई)

अटल जी की कविताओं में उनके संघर्षमय जीवन, परिवर्तनशील परिस्थितियाँ, राष्ट्रव्यापी आन्दोलन, जेल–जीवन आदि अनेक आयामों के प्रभाव एवं अनुभूति ने सदैव ही मुखर अभि. व्यक्ति पायी। अपनी भावनाओं को प्रस्फुटित करते हुए अटल जी ने किशोर वय में ही एक अद्‌भुत कविता लिखी थी – 'हिन्दू तन–मन, हिन्दू जीवन, रग–रग हिन्दू मेरा परिचय', जिससे यह पता चलता है कि बचपन से ही उनका रुझान देश हित की तरफ था। भारत के प्रति असीम प्रेम दर्शाती उनकी यह कविता वाकई मार्मिक है –

भारत जमीन का टुकड़ा नहीं,
जीता जागता राष्ट्रपुरुष है।
हिमालय मस्तक है, कश्मीर किरीट है,
पंजाब और बंगाल दो विशाल कंधे हैं।
पूर्वी और पश्चिमी घाट दो विशाल जंघायें हैं।
कन्याकुमारी इसके चरण हैं, सागर इसके पग पखारता है।
यह चन्दन की भूमि है, अभिनन्दन की भूमि है,
यह तर्पण की भूमि है, यह अर्पण की भूमि है।
इसका कंकर–कंकर शंकर है,
इसका बिन्दु–बिन्दु गंगाजल है।
हम जियेंगे तो इसके लिये
मरेंगे तो इसके लिये। (भारत जमीन का टुकड़ा नही)

पडोसी देशों से सम्बन्ध मधुर रखकर आगे बढ़ने में अटल जी का सदैव विश्वास रहा। 19 फरवरी 1999 को सदा–ए–सरहद नाम से दिल्ली से लाहौर तक बस सेवा का उद्‌घाटन करते हुए प्रथम यात्री के रूप में अटल जी ने पाकिस्तान की यात्रा करके वहाँ के प्रधानमंत्री नवाज शरीफ से मुलाकात की और आपसी संबंधों में विश्वास का एक नया आयाम रचा। पर इस वाकये के कुछ ही समय पश्चात् पाकिस्तानी सेना व उग्रवादियों ने जिस तरह से कारगिल क्षेत्र में घुसपैठ की, उससे अटल का कवि हृदय काफी द्रवित भी हुआ और चौंकन्ना भी। धैर्यपूर्वक ठोस कार्यवाही करके भारतीय क्षेत्र को मुक्त तो करा लिया गया, पर भारत–पाक रिश्तों में खटास सदैव बनी रही। इसकी टीस अटल जी के दिल में सदैव बनी रही –

अमरीका क्या संसार भले ही हो विरुद्ध,
काश्मीर पर भारत का सर नही झुकेगा
एक नहीं दो नहीं करो बीसों समझौते,
पर स्वतन्त्र भारत का निश्चय नहीं रुकेगा। (पड़ोसी से)

यह एक अद्‌भुत संयोग है कि जब हम सभी महात्मा गाँधी जी की 150 वीं जयंती मनाने के लिए अग्रसर हो रहे हैं, उसी दौर में अटल जी इस लोक को छोड़ गए। पर कवि तो हमेशा अपनी रचनाओं में जिन्दा रहता है। अटल जी के मन में महात्मा गाँधी के प्रति अगाध श्रद्धा थी। तभी तो उनकी इस कविता को सुनकर

लगता है कि यह आज भी उतनी ही प्रासंगिक है –

क्षमा करो बापू! तुम हमको,
बचन भंग के हम अपराधी,
राजघाट को किया अपावन,
मंजिल भूले, यात्रा आधी।

जयप्रकाश जी! रखो भरोसा,
टूटे सपनों को जोड़ेंगे।
चिताभस्म की चिंगारी से,
अन्धकार के गढ़ तोड़ेंगे। (क्षमा याचना)

अटल जी की रचनाओं में आशा की लौ हमेशा जलती रहती है। वे निराशावादी नहीं थे, बल्कि जीवटता उनमें कूट–कूट कर भरी थी। तभी तो परमाणु शक्ति सम्पन्न देशों की संभावित नाराजगी से विचलित हुए बिना उन्होंने अग्नि–दो और परमाणु परीक्षण कर देश की सुरक्षा के लिये साहसी कदम भी उठाये। सन् 1998 में राजस्थान के पोखरण में भारत का द्वितीय परमाणु परीक्षण किया जिसे अमेरिका की सी.आई.ए. को भनक तक नहीं लगने दी। कहते हैं कि जब वे मन में एक बार कुछ ठान लेते थे तो उस पर अडिग रहते थे, तभी तो उनका कवि मन लिख पाता था –

बाधाएँ आती हैं आएँ
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ,
पावों के नीचे अंगारे,
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ,
निज हाथों में हँसते–हँसते,
आग लगाकर जलना होगा।
कदम मिलाकर चलना होगा। (क़दम मिला कर चलना होगा)

आज का युवा बड़ा अधीर होता जा रहा है। हर चीज को तुरंत पाने की अंधी होड़ में शार्ट–कट अपनाकर अपना भविष्य दाँव पर लगा दे रहा है। अवसाद, आत्महत्या जैसी प्रवृत्ति से घिरा युवा एक अजीब से मोहजाल में फँसा नजर आता है। ऐसे में अटल जी की ये पंक्तियाँ उसे राह दिखाती हैं–

हम पड़ाव को समझे मंजिल
लक्ष्य हुआ आँखों से ओझल
वर्तमान के मोहजाल में–
आने वाला कल न भुलाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ। (आओ फिर से दिया जलाएँ)

टूटे हुए सपनों की कौन सुने सिसकी
अन्तर की चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी
हार नहीं मानूँगा,
रार नई ठानूँगा,
काल के कपाल पे लिखता मिटाता हूँ
गीत नया गाता हूँ (गीत नया गाता हूँ)

अटल बिहारी वाजपेयी जी के व्यक्तित्व का ही जादू था कि जब वे संसद में बोलने के लिए उठते थे तो लोग उन्हें सुनना चाहते थे। देश और दलों की सीमाओं से परे भी लोग उनके व्यक्तित्व के कायल थे। वे राजनीति में सदैव मर्यादा के पक्षधर रहे। उनकी हाजिर जवाबी के तो सभी कायल थे। वह चाहे प्रधानमन्त्री के पद पर रहे हों या नेता प्रतिपक्ष बेशक देश की बात हो या क्रान्तिका. रियों की, या फिर उनकी अपनी ही कविताओं की नपी–तुली और बेवाक टिप्पणी करने में अटल जी कभी नहीं चूके। राजनीति के छल–कपट से दूर वे सभी को साथ लेकर चलने में विश्वास करते थे, तभी तो दार्शनिक लहजे में उन्होंने लिखा–

क्या खोया, क्या पाया जग में
मिलते और बिछुड़ते मग में
मुझे किसी से नहीं शिकायत
यद्यपि छला गया पग–पग में

एक दृष्टि बीती पर डालें, यादों की पोटली टटोलें ! (अपने ही मन से कुछ बोलें)

अटल जी जीवन को समग्रता में देखने के कायल थे। उन्हें इस बात का सदैव एहसास था कि हर छोटी चीज के अपने मायने होते हैं। अपनत्व व स्नेह की पूंजी से उन्होंने कईयों को सींचा, पर जीवन के अंतिम दिनों में स्मृति विलोप ने उनके जीवन को बाँध दिया। जीवन की ढलती साँझ का एहसास कविवर अटल को हो गया था –

जीवन की ढलने लगी सांझ
उमर घट गई
डगर कट गई
जीवन की ढलने लगी सांझ।
बदले हैं अर्थ
शब्द हुए व्यर्थ
शान्ति बिना खुशियाँ हैं बांझ। (जीवन की ढलने लगी सांझ)

जीवन के अंतिम दिनों में अटल जी जिंदगी और मौत के बीच जूझते रहे। खराब स्वास्थ्य ने उन्हें काफी कमजोर कर दिया। पर वे तो जिजीविषा के धनी थे, फिर भला पीछे कैसे रहते। आखिर उन्हीं की लिखी पंक्तियाँ ही उनके जीवन को दुहरा रही थीं, पर उसमें भी एक भरोसा था फिर से लौटकर आने का–

मौत की उमर क्या है? दो पल भी नहीं,
जिन्दगी सिलसिला, आज कल की नहीं।

मैं जी भर जिया, मैं मन से मरूँ,
लौटकर आऊँगा, कूच से क्यों डरूँ? (मौत से ठन गई)

अटल बिहारी वाजपेयी एक कद्दावर राजनेता थे, पर उनका संवेदनशील हृदय सदैव साहित्य के करीब रहा। राजनीति और साहित्य के अंतर्संबंधों को वे बखूबी समझते थे। एक संवेदनशील कवि और साहित्यकार के रूप में राष्ट्रवाद को धार देती उनकी कविताएं आगामी पीढ़ियों के दिलों में भी हमेशा समाहित रहेंगी।

न रत्नमन्विष्यते मृगयते हि तत।

डॉ. अलका शर्मा
(वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर)
संपादक अध्यात्म संदेश

न रत्नमन्विष्यते मृगयते हि तत।

"रत्न नही ढूंढता बल्कि स्वयं रतन स्वरूप पारखी (जौहरी,गुण ग्राही) उसे ढूंढ लेते है।"
A Gem does not seek its possessor- It is the seeker who discover the Gem-

अपने कथन की पुष्टि के लिए मैं एक लघुकथा आपके समक्ष रखना चाहूंगी ।

एक बार एक किसान खेत मे हल चला रहा था। दैवयोग से उसका हल किसी चीज से टकराया। किसान ने देखा जमीन में एक घड़ा था। किसान ने देखा घडा हीरों से भरा था पर मूर्ख किसान हीरो के मूल्य को नही जानता था उसने सोचा इसमें कोई साधारण कांच भरा है। यही सोचकर किसान सिर पीटता रह गया, दुखी होकर किसान अनमने मन से उन हीरों को फेंक फेंक कर अपनी फसल को खाने वाले कौवे उड़ाने लगा ,और लगभग सभी हीरे खत्म हो गए। बस एक दो ही बचे थे। तभी अचानक उधर से एक जौहरी गुजरा। उसने चमकते हीरे को देखा तो किसान से कहा – तुम मुँह माँगा दाम लो पर ये हीरा मुझे दे दो। किसान बोला इस कांच में ऐसा क्या है जौहरी ने बताया कि यह बहुमूल्य हीरा है। किसान को हीरे का दाम चुका कर जौहरी ने उस हीरे को तुरंत एक कीमती आभूषण में जड़कर बेशकीमती बना दिया। इसी लिए यह कहावत प्रसिद्ध है– हीरे (रत्नों) की कद्र केवल जौहरी ही जानता है ।

आपने टेलीविजन में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम जैसे–इंडियन आइडल, सा रे गा मा, India's Got Talent आदि कार्यक्रमो में देखा होगा कि कैसे सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों से प्रतिभाशाली सदस्य खोज कर लाये जाते है और उनकी प्रतिभा से देश विदेश को अवगत

कराया जाता है। यदि ये कार्यक्रम न होते तो असंख्य प्रतिभाशाली लोगो की प्रतिभा गरीबी, बीहड़ इलाको में ही दम तोड़ देती ।

अक्सर आपने महापुरुषो के जीवनवृत को पढ़ते हुए एक बात सभी मे सामान्य पाई होगी कि वे सभी सामान्य परिवारों से थे लेकिन अपनी असाधारण बुद्धिमत्ता, संकल्प शक्ति, साहस, धैर्ये कर्मठता, आदि विलक्षण गुणों के कारण वे सर्वोच्च पदों पर आसीन हुए। ऐसा नही कि उनके जीवन मे असफलताओं और संघर्षो ने कभी दस्तक नही दी। लेकिन उनके धैर्य के कारण निराशा आशा बन गयी। उनके धैर्य व आत्मविश्वास के कारण उनका व्यक्तित्व असाधारण व्यक्तित्व में बदल गया। अपने धैर्य गुण के कारण उन्होंने प्रतिकूल परिस्थितियों को भी अनुकूल बना लिया। विपत्ति पड़ने पर जो केवल दुखी होता है उनको परेशानी का हल कभी नही मिलता।

क्रन्दनम वर्धते तस्य नान्तम समाधिम गच्छति
यो व्यसनम प्राप्य मोहात केवलं परिदेवयेत ।

(जो विपत्ति पड़ने पर अज्ञानता के कारण केवल रोता चिल्लाता है उनके निराकरण का प्रयास नही करता उसका दुःख बढ़ता ही रहता है कभी समाप्त नही होता।)

समुद्र में हवा के प्रतिकूल चलने पर भी जो अपनी नौका को चलाकर किनारे लगा दे वही विजेता होता है। अनुकूल परिस्थिति में तो सभी कार्य कर लेते है महापुरुषों की निःस्वार्थ सेवा, कर्मठता, ईमानदारी, विलक्षण प्रतिभा को गुण ग्राही लोगो ने एकदम पहचाना और धीरे धीरे वे एक दिन सर्वोच्च पद पर आसीन हुए। लाल बहादुर शस्त्री जी, माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी, इब्राहिम लिंकन इसके सशक्त उदाहरण कहे जा सकते है।

इसी लिए कहा गया है–

आपदां तरणि धैर्यम ।

जिस प्रकार बड़े से समुंदर को भी एक छोटी नौका से पार किया जा सकता है। उसी प्रकार केवल धैर्य से बड़ी से बड़ी विपत्ति का सामना किया जा सकता है। अक्सर स्वयं रत्न स्वरूप गुणग्राही लोग ही किसी व्यक्ति, वस्तु की गुणवत्ता को जानकर यथोचित मान सम्मान दे पाते है । अतः जीवन मे गुणग्राही बनने का पूर्ण प्रयास करे। आपके जीवन मे भी बहुत से रत्न से भी बहुमूल्य व्यक्तिगत, परिवारिक, सामाजिक, सह पाठी, सहकर्मी, मित्रता के रिश्तों से जुड़े असंख्य लोग होंगे उन्हें आप संभाल कर रखे। उनके गुणों के पारखी बने उन पर गर्व करे। अपने अंदर भी सद्गुणों का निरन्तर विकास करते करते स्वयं भी रत्न स्वरूप बनने का प्रयास करे। वास्तव के इस प्रकार के स्वयं रतन स्वरूप प्रतिभा के पारखी लोगो का हृदय से नमन करती हूं जो निरंतर लोगो की जिंदगी रोशन करने का काम करके अपना भी परलोक सुधार रहे है। अब तो आप भी सहमत होंगे कि रत्न नही जौहरी ही स्वयं रत्न को ढूंढ लेता है।

मासिक
अध्यात्म संदेश
जनकल्याण एवं राष्ट्रोत्थान को समर्पित धर्म, संस्कृति, अध्यात्म चिंतन की मासिक ई–पत्रिका

क्या आपकी लेखन में अभिरुचि है?

क्या आप भी कभी अपने विचारों, भावनाओं को व्यक्त करने के लिए कागज – कलम उठाते हैं?

क्या आप लेखक/लेखिका, कवि/कवियत्री है?

आपको **अध्यात्म संदेश** ई पत्रिका की ओर से आमंत्रण है, आप अपनी रचनाएं, कविताएं, गीत, लघु कथाएं हमें प्रेषित करें। आपकी रचनांए आलेख प्रकाशन योग्य होने पर उसका पत्रिका में अवश्य प्रकाशन किया जाएगा।

अपनी रचनायें हमें प्रेषित करते समय यह अवश्य सुनिश्चित करें कि यह रचना आपकी अपनी मौलिक कृति है और न तो यह किसी पत्र – पत्रिका – पुस्तक – ब्लॉग – वेबसाइट आदि में प्रकाशनार्थ विचाराधीन है और न ही कभी प्रकाशित हुई है।

आपकी रचना को मूल रूप में प्रकाशित/संपादित रूप में प्रकाशित करने अथवा प्रकाशित न करने का पूर्ण विवेकाधिकार संपादक मंडल का है।

आलेख भेजने की अंतिम तिथि 15 दिसंबर 2023

विशेष : शब्द सीमा 500–750 शब्दों के मध्य होनी चाहिए

1. लेखक/लेखिका अपनी रचना यूनिकोड/कृतिदेव – वर्ड फाइल में टाइप कराकर ही भेंजे। पी. डी. एफ फाइल न भेजें।
2. लेखक/लेखिका अपनी स्वरचित अप्रकाशित एवं मौलिक रचना के साथ कृपया अपना संक्षिप्त परिचय, व्हाट्सप नंबर, फोटो के साथ भेजें ।
3. आपकी स्वीकृत रचना आपके फोटो के साथ प्रकाशित की जायेगी। प्रकाशित रचना पर पारिश्रमिक देय नहीं है।
4. जनकल्याण हित में ज्ञान वर्धन हेतु यह ई पत्रिका पूर्णतः निः शुल्क है। अपनी रचनाएँ ई–मेलः **editor.adhyatmsandesh@gmail.com** पर प्रेषित करें।

– योगी शिवनन्दन नाथ
प्रधान संपादक

अमानवीयता के दंश से बेजान होता मानवाधिकार

'मानव का इंसान बने रहना जब कठिन प्रक्रियाओं का मंजर बन जाएगा तो सामाजिक उत्थान के लिए निमित्त बनी मर्यादाओं का उलंघन होना कोई असामान्य घटना नहीं होगी। सामाजिक सरोकारों के मध्य बदला लेने की नकारात्मक प्रवृति को आज केवल मानवाधिकार का सकारात्मक एवं सार्थक पक्ष ही दिशा दे सकता है । क्या अमानवीयता का दंश मानवाधिकार को पूरी तरह से बेजान कर देने में सफल हो जाएगा घ् समस्त नीति–नियम इंसानियत और हैवानियत के इर्द–गिर्द घूमते हुए जब अपना अस्तित्व तोड़ देंगे और उसकी परवाह किए बिना मानव स्वयं की आत्मिक सच्चाई को जानने से अनभिज्ञ हो जाएगा ए तो मानवाधिकार का सबल स्वरुप भी हमारे सामने निरीह होता हुआ ही दिखाई देगा।'

डॉ. अजय शुक्ला
गोल्ड मेडलिस्ट इंटरनेशनल ह्यूमन राइट्स मिलेनियम अवार्ड
डायरेक्टर, स्प्रीचुअल रिसर्च स्टडी एंड एजुकेशनल ट्रेनिंग सेंटर
देवास, मध्य प्रदेश

संवेदनशील मानवीय संबंधों में परिष्कार : अनुशंसाओं और आश्वासनों के भंवर जाल में फंसे मानवाधिकार के वृहद् आकार पर आज अमानवीयता का कहर इस कदर काबिज हो चुका है कि मानवाधिकार का अस्तित्व ही संकट में पड़ गया है । मानवता की आहट का सजग प्रहरी समझे जाने वाले मानवाधिकार को हमारी सरकारें जब अपना सिरदर्द समझ कर उससे सौतेला व्यवहार करने पर उतारू हो जाएंगी तब मानवाधिकार का पक्षाघात से पीड़ित स्वरुप जनमानस की समझ से परे नहीं रह पाएगा। अमानवीय कृत्यों के मध्य मानवता की पहल करते मानवाधिकार की बढ़ती लोकप्रियता और घटती विश्वसनीयता की परिणिति, मौत के सबब का प्रतिउत्तर ढूंढने में संलग्न है। कानून की तूती के सामने मानवाधिकार की गुहार का हश्र इतना बौना हो गया है कि मानवाधिकार से जनमानस यह पूछ रहा है कि– व्यापक कर्तव्य और सीमित अधिकार, क्या यही है मानवाधिकार? अमानवीयता के सर्प दंश से बेजान होती मानवाधिकार की संजीवनी भले ही अंतरराष्ट्रीय संधि का सुफल एवं उपलब्धिपूर्ण परिणाम हो लेकिन आज मानवता के स्थायित्व के लिए वह अप्रभावी बन चुकी है । सामाजिक संबंधों के परिष्कार के लिए नीति शास्त्रों की उपयोगिता पर प्रश्न चिह्न लग जाना इसलिए यथार्थ

प्रतीत होता है क्योंकि मानव ने यह मान लिया है कि इंसान बने रहना बहुत मुश्किल है ।

कर्तव्य, धर्म निर्वहन की वास्तविकता: सामाजिक परिष्कार की प्रक्रिया में विस्तार और विकृति का सहचर्य कुछ इस प्रकार प्रविष्ट होता चला गया कि मानव को स्वयं के आत्मिक अस्ति. त्व पर नजर फेरने की फुर्सत ही नहीं मिली और वह धीर–धीरे दानवीय प्रवृतियों के शिकंजे में न चाहते हुए भी जकड़ता चला गया। जन–जन को मानवता का पाठ पढ़ाने वाले मानवाधिकार की आंतरिक एवं बाह्य पृष्ठभूमि केवल अनुशंसाओं और आश्वासनों में ही उलझकर रह जाएगी ऐसा किसी ने सोचा नही था। अपेक्षाओं के साथ उम्मीद का दामन थामें हुए जब कोई व्यक्ति इंसानियत के खातिर मानवाधिकार हनन के मामले को लेकर मानवाधिकार आयोग के सम्मुख दस्तक देता है तब उसे आश्वासनों का पुलिंदा झुनझुने के रूप में थमा दिया जाता है और भविष्य में चंद रुपयों के मुआवजे की अनुशंसा ए मानव के अधिकार को पूर्ण विराम देने के लिए कर दी जाती है ।

मानव द्वारा अपने कर्तव्य–धर्म को निभाने की वास्तविकताएं जब पूर्णतः धूमिल पड़ जाएंगी तब मानवाधिकार की भूमिकाओं को सशक्त बनाने की अनिवार्य आवश्यकता उत्पन्न होने लगेगी। सच तो यह है कि मानवाधिकार के ऊपर अमानवीय प्रवृतियों का बोलबाला कुछ इस तरह व्याप्त हो गया है कि अपने निजी अस्तित्व की रक्षा में अब मानवाधिकार सम्पूर्ण रूप से केन्द्रित हो चुका है। मानवीय व्यवहार की वास्तविकताएं कुछ इस कदर चतुराई को आत्मसात कर चुकी है कि उसके कृत्यों को पारिभाषित करना वर्तमान स्थितियों में अत्यधिक दूभर हो गया है इसलिए ऐसी स्थिति में मानवाधिकार से इंसानियत की रक्षा का अर्थपूर्ण दायित्वबोध के साथ अपेक्षा किया जाना आम जनमानस के लिए डूबते जहाज से साहिल की तलाश के अलावा और क्या हो सकता है?

आत्मसम्मान की पुनर्स्थापना में मानवाधिकार : व्यवस्थागत प्राणियों में सुधार की गुंजाइश को अंकुश के रूप में स्वीकारने की राजसत्ता की मंशा कभी नहीं होती है ऐसे में जनहित याचिकायों के फैसले और उससे जुड़े सरोकारों का सबब तथा मानवाधिकार आयोगों की अनुसंशाएं सरकार की नाक में दम की स्थिति का कारक बन गई हैं। मानवाधिकार आयोग आज सरकार के लिए अनावश्यक दायित्व बन कर रह गए हैं क्योंकि राज्य सत्ता की सुख–सुविधा एवं शांति में मानवाधिकार हनन की घटनाएं खलल पैदा कर देती हैं। आधुनिकता की चकाचौंध, गतिशीलता में मानवीय भावनाओं पर कुठाराघात की घटनाएं मानसिक विचलन की आंधी का पर्याय बनकर जब उभरती हैं तो उन्हें आत्मसम्मान के साथ पुनर्स्थापित करने का कार्य मानवाधिकार आयोग का होता है ।

विकासात्मक स्थितियों के मध्य दम तोड़ती संवेदनशीलताएं अपने आंकड़ों के माध्यम से जगत के सम्मुख सब कुछ अर्थात् वास्तविक यथार्थ को स्पष्ट कर चुकी हैं जिन्हें रोकने एवं टोकने के लिए मानवाधिकर आयोगों की भूमिकाएं पूर्ण रूपेण पारदर्शी स्वरुप में स्पष्ट तो हैं लेकिन उन्हें निरंतर अनसुना कर देने की प्रक्रियाएं सरकार की मनसा को पूर्णतरू स्पष्ट कर देती है। अमानवीयता के दमन चक्र में स्थायी रूप से बेढियां डालने हेतु तत्पर होती व्यवस्थागत एवं सामाजिक संस्थाएं क्या निरंतर रूप से असहयोग के बावजूद भी जीवित रह सकेंगी? यह यक्ष प्रश्न बौद्धिक वर्ग के साथ–साथ वर्तमान सामाजिक परिवेश में आज जनमानस के मध्य चर्चा एवं परिचर्चा का नियमित विषय बन चुका है।

अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संधि की समग्रता : मानवाधिकार की बढ़ती लोकप्रियता और घटती विश्वसनीयता की परिणिति जब मौत के सबब का प्रतिउत्तर खोजने में व्यस्त हो जाएगी तब अमानवीय कृत्यों के मध्य मानवता की पहल करते मानवाधिकार की सुध–बुध भला कौन लेगा? अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार संधि के अंतर्गत समग्र मानवीय दृष्टिकोणों को कानूनी दावं–पेंच के द्वारा पुनः तौलने की खंडित प्रवृति ने मानवाधिकार की व्यापकता को अत्यधिक सीमित कर दिया है। विभिन्न राष्ट्रों के द्वारा स्थापित मानवाधिकार आयोग जब यह ज्ञात करने कि– पहल करने लगे की कानून के हिसाब से यह देखा जाएगा कि पीड़ित पक्षकार के मानवाधिकार का वास्तविक रूप में हनन हुआ है अथवा नही ऐसी स्थिति में मानवीय भावनाओं से जुड़ी इंसानियत को कितनी राहत और अंतर्मन को कितना संबल मिलेगा यह स्थिति मानवाधिकार के मामले में अत्यंत चिंतनीय पहलू बन जाता है ।

सामाजिक घटनाओं का विकृत स्वरुप यह स्पष्ट संदेश तो देता है कि मानवाधिकार आयोग द्वारा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से हस्तक्षेप की पहल करके मार्गदर्शन और परामर्श के द्वारा मानवता को स्थापित किए बिना सामाजिक समरसता से युक्त समानता कायम नहीं हो सकती। वर्तमान समाज द्वारा यह अपेक्षा किया जाना कि प्रत्येक व्यक्ति के अमानवीय व्यवहार पर नियंत्रण रखने के लिए मानवाधिकार आयोग द्वारा प्रशासनिक स्तर पर पुलिसिया भूमिका को अख्तियार कर लिया जाए ए यह स्थिति सामाजिक व्यवस्था में असंभव क्रिया–विधि का जीवंत नमूना ही कहा जाएगा ।

मानवाधिकार की समग्रता का स्वरुप : मानव का इंसान बने रहना जब कठिन प्रक्रियाओं का मंजर बन जाएगा तो सामा. जिक उत्थान के लिए निमित्त बनी मर्यादाओं का उलंघन होना कोई असामान्य घटना नहीं होगी। सामाजिक सरोकारों के मध्य बदला लेने की नकारात्मक प्रवृति को आज केवल मानवाधिकार का सकारात्मक एवं सार्थक पक्ष ही दिशा दे सकता है। क्या अमानवीयता का दंश मानवाधिकार को पूरी तरह से बेजान कर देने में सफल हो जाएगा? समस्त नीति–नियम इंसानियत और हैवानियत के इर्द–गिर्द घूमते हुए जब अपना अस्तित्व तोड़ देंगे और उसकी परवाह किए बिना मानव स्वयं की सच्चाई को जानने से अनभिज्ञ हो जाएगा, तो मानवाधिकार का सबल स्वरुप भी हमारे सामने निरीह होता दिखाई देगा ।

अतः आंतरिक हृदय के उमंग–उत्साह के साथ सम्पूर्ण मानवता को मानवीय स्वरुप में एकत्रित करने हेतु मानव को मानव से जोड़ने की तीव्रगामी अंतर्यात्रा ही अमानवीयता के दंश से बेजान होते मानव अधिकार को पुनर्जीवित करके – सशक्त और सक्षम, समर्थ स्वरुप में स्थापित कर सकती है ।

ज्योतिष क्या है ?

पंडित कैलाशनारायण
ज्योतिषाचार्य
उज्जैन, मध्य प्रदेश

ज्योतिषमान जागृत जगत की एक ज्योति का नाम ही जीवन है। ज्योति का पर्याय ज्योतिष है अथवा ज्योतिस्वरूप ब्रह्म की व्याख्या का नाम ज्योतिष है। वेदरूप ज्योतिष ब्रह्मरूप ज्योति का ज्योतिष है जिसका द्वितीय नाम संवत्कर ब्रह्म या महाकाल है।

ब्रह्म सृष्टि के मूल बीजाक्षरों या मूल अनन्त कलाओं को एक-एक कर जानना वैदिक दार्शनिक ज्योतिष कहा जाता है। इसका दूसरा स्वरूप लौकिक ज्योतिष है जिसे खगोलीय या ब्रह्माण्डीय ज्योतिष कहा जाता है। व्यक्त या अव्यक्त इन दोनों के आकार, दोनों की कलायें एक समान हैं। वैदिक दर्शन के लिए यह वेदांगी ज्योतिष दर्शन सूर्य के समान प्रकाश देने का काम करता है इसी कारण इसे ब्रह्मपुरुष का चक्षु कहा गया है।

ज्योतिषशास्त्र की व्युत्पत्ति ''ज्योतिषां सूर्यादि ग्रहाणां बोधकं शास्त्रम'' की गई है। अर्थात् सूर्यादि ग्रह और काल का बोध कराने वाले शास्त्र को ज्योतिषशास्त्र कहा जाता है। भारतीय ज्योतिषशास्त्र की परिभाषा के स्कन्ध-त्रय-होरा, सिद्धान्त और संहिता अथवा स्कन्ध पंच होरा, सिद्धान्त, संहिता, प्रश्न और शकुन ये अंग माने गये हैं। यदि विराट पंचस्कन्धात्मक परिभाषा का विश्लेषण किया जाये तो आज का मनोविज्ञान, जीवविज्ञान, पदार्थ विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं चिकित्साशास्त्र इत्यादि इसी के अन्तर्भूत हो जाते हैं। बिना आँख के जैसे दृश्य जगत का दर्शन असम्भव है वैसे ही ज्योतिष के बिना ज्ञान के विश्वकोश वेद भगवान् का दर्शन भी असम्भव है।

'सा प्रथमा संस्कृति विश्ववारा।' का उद्घोष करने वाले वेद ने भारतीय संस्कृति को विश्व की सर्वप्रथम संस्कृति माना है। यदि हम इस प्राचीनतम श्रेष्ठ संस्कृति से पुनः जुड़ना चाहते हैं तो हमें ज्योतिष का ज्ञान अनिवार्य रूप से प्राप्त करना होगा। हमें हमारी संस्कृति से जोड़ने का सेतु ज्योतिष ही है।

'वैदिक ज्योतिष में और आपकी कुंडली में ग्रहों का कितना बड़ा महत्व है।'

ज्योतिष में ग्रहों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। दरअसल, ज्योतिषीय भविष्यवाणी के लिए ग्रहों की स्थिति और दशाओं का अध्ययन किया जाता। इन ग्रहों का अपना स्वभाव और अपनी प्रकृति होती है। ये मनुष्य जीवन में प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव डालते हैं। आइए जानते हैं ज्योतिष में ग्रहों का कितना बड़ा महत्व होता है।

ज्योतिष में सूर्य ग्रह
ज्योतिष में चन्द्र ग्रह
ज्योतिष में शुक्र ग्रह
ज्योतिष में मंगल ग्रह
ज्योतिष में बुध ग्रह
ज्योतिष में बृहस्पति ग्रह
ज्योतिष में शनि ग्रह
ज्योतिष में राहु ग्रह
ज्योतिष में केतु ग्रह

वैदिक ज्योतिष में 9 ग्रह हैं जिन्हें नवग्रह कहा जाता है। इसमें सूर्य और चंद्रमा को भी ग्रह माना जाता है। इसके अलावा मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि और राहु-केतु भी इनमें शामिल हैं। हालाँकि राहु और केतु ग्रह को छाया ग्रह कहा जाता है। इन ग्रहों की अपनी एक अलग प्रकृति और अपना भिन्न स्वभाव होता है। अपनी विशेषता के कारण इनमें से कुछ ग्रह शुभ तो कुछ क्रूर ग्रह होते हैं। हालाँकि केवल बुध एक ऐसा ग्रह है जो तटस्थ ग्रह की श्रेणी में आता है।

उपरोक्त तालिका में सभी ग्रहों को तीन श्रेणी में विभाजित किया गया है। इनमें शुभ ग्रह में बृहस्पति और शुक्र हैं तो क्रूर ग्रह में सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु शामिल हैं। जबकि बुध तटस्थ ग्रह है अर्थात् यह शुभ ग्रह के साथ होने पर शुभ और अशुभ ग्रह के साथ होने पर अशुभ प्रभाव देता है। वहीं चंद्रमा शुभ ग्रह तथा अशुभ ग्रह दोनों श्रेणी में है। हालाँकि यह बली होने पर ही शुभ ग्रह माना जाता है, जबकि कमजोर होने पर यह क्रूर ग्रह के समान ही फल देता है। इनके द्वारा ही समस्त ज्योतिषीय गणना संभव हैं।

क्रमशः

भगवान नेमिनाथजी का गर्भ कल्याणक

डॉ. अरविंद जैन (विद्यावाचस्पति)
संरक्षक शाकाहार परिषद्
भोपाल

भगवान श्री अरिष्टनेमी अवसर्पिणी काल के बाईसवें तीर्थकर हुए। इनसे पूर्व के इक्कीस तीर्थकरों को प्रागैतिहासिककालीन महापुरुष माना जाता है। आधुनिक युग के अनेक इतिहास विज्ञों ने प्रभु अरिष्टनेमि को एक ऐतिहासिक महापुरुष के रूप में स्वीकार किया है।

वासुदेव श्रीकृष्ण एवं तीर्थकर अरिष्टनेमि न केवल समकालीन युगपुरूष थे बल्कि पैतृक परम्परा से भाई भी थे। भारत की प्रधान ब्राह्मण और श्रमण–संस्कृतियों ने इन दोनों युगपुरूषों को अपना–अपना आराध्य देव स्वीकारा है। ब्राह्मण संस्कृति ने वासुदेव श्रीकृष्ण को सोलहों कलाओं से सम्पन्न विष्णु का अवतार स्वीकारा है तो, श्रमण संस्कृति ने भगवान अरिष्टनेमि को अध्यात्म की सर्वोच्च विभूति तीर्थकर तथा वासुदेव श्रीकृष्ण को महान कर्मयोगी एवं भविष्य का तीर्थकर मानकर दोनों महापुरुषों की आराधना की है।

भगवान अरिष्टनेमि का जन्म यदुकुल के ज्येष्ठ पुरूष दशार्ह–अग्रज समुद्रविजय की भार्या शिवा देवी की रत्नकुक्षी से श्रावण शुक्ल पंचमी के दिन हुआ। समुद्रविजय शौर्यपुर के शासक थे। जरासंध से विवाद के कारण समुद्रविजय यदुवंशी परिवार सहित सौराष्ट्र प्रदेश में समुद्र तट के निकट द्वारिका नामक नगरी बसाकर रहने लगे। श्रीकृष्ण के नेतृत्व में द्वारिका को राजधानी बनाकर यदुवंशियों ने महान उत्कर्ष किया।

अंततः एक वर्ष तक वर्षीदान देकर अरिष्टनेमि श्रावण शुक्ल षष्टी को प्रव्रजित हुए। चौपन दिवसों के पश्चात आश्विन कृष्ण अमावस्या को प्रभु केवली बने। देवों के साथ इन्द्रों और मानवों के साथ श्रीकृष्ण ने मिलकर कैवल्य महोत्सव मनाया। प्रभु ने धर्मोपदेश दिया। सहस्त्रों लोगों ने श्रमण–धर्म और सहस्त्रों ने श्रावक–धर्म अंगीकार किया। वरदत्त आदि ग्यारह गणधर भगवान के प्रधान शिष्य हुए। प्रभु के धर्म–परिवार में अठारह हजार श्रमण, चालीस हजार श्रमणियां, एक लाख उनहत्तर हजार श्रावक एवं तीन लाख छत्तीस हजार श्राविकाएं थीं। आषाढ शुक्ल अष्टमी को गिरनार पर्वत से प्रभु ने निर्वाण प्राप्त किया।

दो जैन तीर्थकरों ऋषभदेव एवं अरिष्टनेमि या नेमिनाथ के नामों का उल्लेख 'ऋग्वेद' में मिलता है। अरिष्टनेमि को भगवान श्रीकृष्ण का निकट संबंधी माना जाता है। अरिष्टनेमि जी जैन धर्म के बाईसवें तीर्थकर थे।

भगवान के चिह्न (शंख) का महत्व – भगवान अर्षिटनेमि के चरणों में अंकित चिन्ह शंख है। शंख में अनेक विशेषताएं होती है। 'संखे इव निरंजणे' शंख पर अन्य कोई रंग नहीं चढ़ता। शंख सदा श्वेत ही रहता है। इसी प्रकार वीतराग प्रभु शंख की भांति राग–द्वेष से निर्लेप रहते हैं। शंख की आकृति मांगलिक होती है और शंख की ध्वनि भी मांगलिक होती है। कहा जाता है कि शंख–ध्वनि से ही ॐ की ध्वनि उत्पन्न होती है। शुभ कार्यो यथा : जन्म, विवाह, गृह–प्रवेश एवं देव–स्तुति के समय शंख–नाद की परम्परा है। शंख हमें मधुर एवं ओजस्वी वाणी बोलने की शिक्षा देता है।